मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

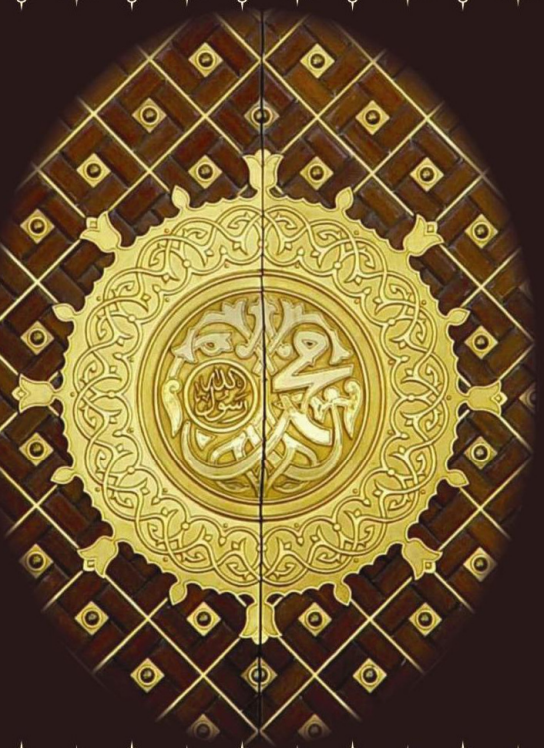

आदर्श चरित्र

"आप (स०अ०) की जीवनी का सबसे बड़ा संदेश और उसका सबसे बड़ा चमत्कार ये है कि उसने क़यामत तक के लिये पूरी मानवता के सामने एक ऐसे सम्पूर्ण जीवन का नमूना प्रस्तुत कर दिया, जो हर युग में, मनुष्य के हर वर्ग के लिये, हर प्रकार की स्थिति में कार्य करने योग्य है, बल्कि कार्य करने में आसान है। कोई व्यक्ति ये नहीं कह सकता कि इसमें उसकी समस्या का समाधान या उसके सवाल का जवाब नहीं।"

मौलाना मुहम्मदुल हसनी (रह०)

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी

दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

DEC 14

₹10/-

अन्तिम संदेष्टा

"और हमने कोई बस्ती हलाक नहीं की मगर इसके लिये नसीहत करने वाले (पहले भेज देते थे।"

नबूवत के सिलसिले के ख़ात्मे से इन्सान की सलाहियतें और ताक़ते इस ख़तरे से महफ़ूज़ हो गयीं कि थोड़े–थोड़े वक़्फ़े और दूर के फ़ासले पर एक नये नबी या दावत का उदय हुआ और वो सारे ज़रूरी काम छोड़कर उसकी हक़ीक़त मालूम करने और उसको प्रमाणित करने के फ़ैसले में लग जायें इस तरह सीतिम इन्सानी ताक़त को उसकी रोज़–रोज़ की व्यवस्तता और आज़माइश से बचा लिया गया। अगर नबूवत का सिलसिला क़ायम रहता और नये क़ानूनों और नयी शिक्षा व नसीहतों के पाने के लिये ज़मीन का आसमान से रिश्ता बाक़ी रहता और थोड़े अर्से बाद कोई नबी ये दावत लेकर उठता रहता कि अल्लाह उससे ख़िताब करता है, उसकी तरफ़ वही आती है, और वो रिसालत के काम पर लगाया गया है, वो अपना इनकार करने वालों को काफ़िर क़रार देता और उनसे जंग करता, जिसमें किसी झूठ व फ़र्क़ की और किसी अपवाद की गुंजाइश न होती और दुनिया में फैली हुई उम्मत से काटकर सैंकड़ों या हज़ारों या कुछ लाख लोगों पर आधारित एक छोटी सी उम्मत बना लिया करता, इस तरह हर थोड़ी मुद्दत बाद इस फैली हुई दुनिया की किसी न किसी जगह पर नबूवत का दावा करने वालों के पैदा होने के बारे में लोग फ़ैसलों में ही उलझ कर रह जाते, उन नबूवत का दावा करने वालों में कुछ दिमाग़ी मरीज़ और हवास गवा चुके हुए लोग, कुछ पेशावर और दुकानदार क़िस्म के लोग, कुछ होशियार लोग और हुकूमतों की ग़रज़ से आलाकार, कुछ इल्म की कमी और इबादत व मुजाहिदे की कसरत से तल्बीसाते शैतानी और फ़रेब का शिकार। ये सारी क़िस्में उन दावा करने वालों में पायी गयी हैं, जो पिछले ज़माने में उदय हुए और अक़्ल इन्सानी ज़िन्दगी का अनुभव, मानवीय मानसिकता का अध्ययन, राजनीति व शासन के उद्देश्य का इल्म अब भी उनको नामुमकिन क़रार नहीं देता, बल्कि नयी शिक्षा और अनुभव की रोशनी में उनको समझना और आसान हो गया है।

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:१२ दिसम्बर २०१४ ई० वर्ष:६

संरक्षक: हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष – दारे अरफ़ात)

निरीक्षक
मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री– दारे अरफ़ात

सम्पादक
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

मुद्रक
मो० हसन नदवी

सह सम्पादक
मो० नफ़ीस ख़ाँ नदवी

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

इस अंक में:

इस्लामी एकता!..३
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

यतीम की जीत...४
मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी रह०

मानवाधिकार का हनन और दुनिया की ख़ामोशी.....५
मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

खुफ़्फ़ैन पर मसह करने के एहकाम....................७
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

मीलाद इस्लामी शरीअत की नज़र में.................९
डॉ. हाफ़िज़ हारून रशीद सिद्दीक़ी

नबी करीम स०अ० की पत्नियाँ ११

इस्लामी अक़ीदा...१३
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

ऐसे थे हमारे नबी स०अ० ....१५
अबरार हसन अय्यूबी नदवी

सीरते पाक के कुछ नमूने.............................१५
मुहम्मद अमीन हसनी नदवी

पैग़म्बर–ए–इन्क़िलाब.................................१८
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

आख़िरी सहारा...२०
अबुल अब्बास ख़ाँ

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली, य०पी०.229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला ख़ाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण, मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

प्रति अंक 10रू

वार्षिक 100रू०

एकता का उद्देश्य

"दुनिया का इतिहास बताता है कि एकता ने अब तक निर्माण से ज़्यादा बर्बादी का काम किया है। यानि बिल्कुल अपने मिज़ाज, अपनी फ़ितरत, अपने दावे, और अर्थ के विपरीत किरदार निभाया है। एकता इसलिये थी कि लोगों मे प्रेम व एका पैदा करे, भलाई का जज़्बा पैदा करे, आपसी विश्वास का वातावरण पैदा करे, लेकि एकता एकता से टकरायी, जिस तरह जुनून जुनून से टकराया, हालांकि कोई चीज़ भी एक दूसरे से टकराये, लेकिन एकता को एकता से नहीं टकराना चाहिये। इससे बढ़कर अपनी फ़ितरत से बग़ावत नहीं हो सकती है कि एकता एकता से टकराये। बर्बादी बर्बादी से टकरा सकती है। फूट–फूट से टकरा सकती है। लेकिन जमाअतें आपस में टकराये, एकता–एकता से टकराये, ये एक अनोखा अनुभव है जिससे हमारी मानव जाति का इतिहास दाग़दार बल्कि शर्मसार है। ये एक दिल को चोट पहुंचाने वाली और लम्बी दास्तान है।

वजह ये है कि इसका संबंध एकता के आधार पर है। एकता किस बुनियाद पर है? अगर एकता किसी नकारात्मक आधार पर है, अगर किसी ज़बरदस्ती के भाव पर है, अगर एकता बरतरी के एहसास पर है, अगर एकता यदि एकता का आधार लोगों को तुच्छ मानने पर है, सत्ता पाने की हवस है, या अधिपत्य व वर्चस्व के लिय है तो ऐसी एकता को किसी गवारा नहीं करना चाहिये कि एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं।

ख़ाली एकता का शब्द बिल्कुल पर्याप्त नहीं , अब मौक़े के अनुभव ने मानव जाति के लगातार और लम्बे अनुभव ने बता दिया कि केवल एकता कोई अर्थ नहीं रखती। और किस बात की ज़मानत नहीं है। देखना ये है कि वहदत किस बुनियाद पर है?इस वहदत की असास क्या है? एकता के उद्देश्य क्या हैं?"

इस्लामी एकता का आधार

"इस्लाम ने बनावटी एकता के मामले में दो वास्तविक एकता को स्वीकार किया है और उनकी दावत दी है। ये दुनिया की सबसे मासूम, अहानिकारक, सकारात्मक और निर्माणी एकताएं हैं। एक मानवीय एकता और एक ईमानी एकता, इन्सानी एकता तो ये कि पूरी इन्सानी नस्ल एक आदम की औलाद हैं। और आप स0अ0 ने आख़िरी हज के मौक़े पर ऐसे चमत्कारी शब्दों में इस पर मुहर लगा दी कि इससे ज़्यादा इन्सानी समानता का कोई चार्ट नहीं हो सकता है। आप स0अ0 ने फ़रमायाः "ऐ इन्सानों! तुम्हारा रब भी एक है और तुम्हारा बाप भी एक है।"

अल्लाह का एक होना और बाप का एक होना ये दो समानताएं हैं जो हर इन्सान को मिली हैं। इसके जिस्मानी वजूद का आग़ाज़ एक इन्सानी वजूद से होता है। बड़ा हो, छोटा हो, किसी भी ज़बान को बोलने वाला हो, किसी सतह का इन्सान हो, सबके ख़ानदानों का सिलसिला एक ही इन्सान पर ख़त्म होता है। और वो इन्सानी नस्ल के बाप हज़रत आदम हैं।

इन दो संक्षिप्त शब्दों में मानव एकता का वो ऐलान किया गया जिससे ज़्यादा वृहद, गहरा और जिससे ज़यादा समझने योग्य कोई ऐलान नहीं हो सकता है ये दोनों जो इन्सान को मिली हैं, इन्सान को एक दूसरे से जोड़े हुए है। मानव जाति के पूवर्ज एक, और नस्ल इन्सानी का सृष्टा, पालक और पोषक एक, इस लिये हर शख़्स एक दूसरे का भाई और दो रिश्तों से भाई, एक बाप के रिश्ते से और एक पैदा करने वाले के रिश्ते से।

ये वो मानवीय एकता हैं जिसका ऐलान आख़िरी हज के मौक़े पर किया गया है। ये एक व्यापक ख़ुत्बा था जिसकी मुख़ातिब पूरी मानव जाति थी ये एक शहादत थी जो एक नबी दे रहा था और एक तरह का ऐलान था जो आख़िरी नबी कर रहे थे।"

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

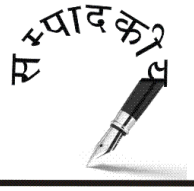

सम्पादकीय

इस्लामी एकता

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मुसलमानों को अल्लाह तआला ने इस्लामी भाईचारे की लड़ी में पिरोया है। ये ऐसी भाईचारगी है जिसमें आकर हर रंग व नस्ल के लोग एक हो जाते हैं। फिर कोई फ़र्क़ या अन्तर बाक़ी नहीं रह जाता सिवाए उस श्रेष्ठता के जो अल्लाह तआला ने तक़्वे में रखी है। तक़्वे की यही शान है जिसने सहाबा रज़ि0 सबसे ऊंचा स्थान प्रदान किया। जिनके बारे में खुद अल्लाह तआला ने गवाही दी की वो सबसे बढ़कर इसके मुस्तहिक़ थे। तक़्वे से दिल की निगाहें ऐसी रोशन हो जाती हैं कि फिर बारीक से बारीक ज़र्रा भी नज़र आने लगता है और कोई भी तक़्वे का मिज़ाज रखने वाला इसको बर्दाश्त नहीं करता और फ़ौरन सफ़ाई की फ़िक्र में लग जाता है। इसी का नाम स्वयं का निरीक्षण है।

इस्लामी भाईचारे के परिणाम में जो एकता पैदा होती है उसका ये मतलब बिल्कुल नहीं कि दीन के बारे में ख़ुशामद का भाव पैदा हो जाये और दूसरों को ख़ुश करने के लिये एक मुसलमान इस्लामी पहचान और सुन्नत के कामों में भी बदलाव करने पर आमादा हो जाये। ये तरीक़ा तो यहूद व नसारा का था जिसके नतीजे में उन्होंने दीन की शक्ल ही बिगाड़ दी। दीन में बदलाव की इजाज़त तो न कभी दी गयी है और न कभी दी जा सकती है।

ख़ुद मुसलमानों में न जाने कितने फ़िरक़े हैं जिन्होंने दीन की शक्ल ही बिगाड़ दी है। इस्लामी एकता का ये मतलब बिल्कुल नहीं कि एक सही अक़ीदे वाला मुसलमान गुमराह फ़िरक़ों को ख़ुश करने के लिये अपनी सही फ़िक्र और अक़ीदे से सौदा करने लगे या सुन्नत के कामों में बदलाव करे। ये काम वही करेगा जो दीन की हक़ीक़त से अनजान है। हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ि0 ने आप स0अ0 की वफ़ात के बाद जिस धैर्य व दृढ़ता का सुबूत दिया वो दीन की समझ और दीन को समझाने के लिये ऐसी रोशन मिसाल है जिससे दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है। कैसे सख़्त हालात थे जो ज़ाहिरी तौर पर नर्मदिल थे। मुसलमानों की एकता बनी रहे, लेकिन हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ि0 ने ये हक़ीक़त समझ ली कि जब इस्लाम ही बाक़ी न रहेगा तो इस्लामी एकता का वजूद मिट जायेगा। इस्लामी एकता को बनाए रखने के लिये सबसे पहले इस्लाम की सुरक्षा आवश्यक है। हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ि0 ने ऐलान फ़रमाया: जो अल्लाह के रसूल स0अ0 के ज़माने में होता था, ज़कात का जो निज़ाम चल रहा था, वही अब भी जारी रहेगा, इसमें कोई तब्दीली करेगा तो मैं उसके ख़िलाफ़ जिहाद करूंगा। मसला दीन का आया तो वही सिद्दीक़–ए–अकबर रज़ि0 जिनकी नर्मी की मिसाल दी जाती थी, वो पहाड़ की चट्टान बन गये।

मुसलमानों की एकता समय की मांग है और यक़ीनन जो लोग भी क़ुरआन व हदीस को मानते हैं जहां तक हो सके इस्लाम के नाम पर जोड़ने की बात की जाये। मामूली बातों को जो मसनून न हों हरगिज़ झगड़े की वजह न बनाया जाये। और एकता के लिये उन नुक्तों पर ज़ोर दिया जाये जिन पर सबकी सहमति है। गुमराह फ़िरक़ों को सही रास्ते पर लाने का भी ये एक बुद्धिमतापूर्ण रास्ता है ताकि मिज़ाजों में ज़िद न पैदा हो जाये। अगर ये बात हमेशा सामने रहे कि दीन की सुन्नतों में ज़रा भी बदलाव पैदा न होने पाये। इस्लाम का ये नियम है कि दावत के लिये भी कोई ग़लत तरीक़ा इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है। अल्लाह की ज़ात ग़नी है और उसका दीन भी ग़ैरतमन्द है, उसको हमारी ज़रूरत नहीं है, हमें उसकी ज़रूरत है, जबकि हिकमत दावत के लिये ये ज़रूरी है, ये अल्लाह का हुक्म है।

ये संतुलन का मार्ग है। इसके लिये बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है। वरना लोग कमी–ज़्यादती का शिकार हो जाते हैं। एकता का नारा लगाने वाले आम तौर पर दीन की हक़ीक़त को भूल बैठते हैं और दूसरी तरफ़ कभी ऐसी कट्टरता पैदा हो जाती है कि मामूली–मामूली बातों के लिये लोग लड़ने–मरने को तैयार हो जाते हैं। ये दोनों सूरतें नामुनासिब हैं और दीन के मिज़ाज से मेल नहीं खातीं, नबी करीम स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया: "संतुलन अपनाओ और क़रीब होने की कोशिश करो" "बशारत का साधन बनो नफ़रत का साधन मत बनो, आसानी करो सख़्ती मत करो।"

यतीम की जीत

मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी रह०

"जो ज़ोर वाले थे उनका ज़ोर तोड़ने के लिये, जो घमन्ड वाले थे उन्हें नीचा दिखाने के लिये, जो हिकमत व हुकूमत वाले थे, उनमें बन्दा होने की भावना पैदा करने के लिये, और सबसे बढ़कर अपनी बेमिसाल कुरदत व हिकमत का बेमिसाल नमूना दिखाने के लिये, उसको चुना जाता है जो न ज़ोर रखता है न ज़र, न उसके पहलू में सवार और प्यादे हैं और न ही उसकी बग़ल में इल्म व फ़न की पोथियां, एक बे यार व मददगार यतीम बच्चा जिसके पैदा होने से पहले ही उसके बाप को उठा लिया जाता है, अरब की सरज़मीन पर नमूदार होता है और उसे हुक्म मिलता है कि अपने ख़ानदान और अपने क़बीला ही की नहीं, सारे देश की भी नहीं, सारी दुनिया के सुधार पर कमर बांध ले! अक्लें हैरान, दिमाग़ परेशान।

जिन्हें अपनी सभ्यता व संस्कृति पर नाज़ था, उन्होंने क़हक़हे लगाये। जिन्हें भाषणों व चमत्कारी बयानो का दावा था उन्होंने तालियाँ बजायीं जिन्हें आज कल की नंगी तस्वीरों और अधनंगी सूरतों की तरह अपनी नंगी शायरी पर फ़ख़्र था उन्होंने आवाज़े कसे। माल और जत्थेवालों के तेवर पर बल पड़े और जो ज़ोर व क़ूवत वाले थे तन तन कर और अकड़–अकड़ कर मैदान में निकल आये।

मामला ज़ोर और कमज़ोर के बीच, जिसे दुनिया ज़ोर और ताक़त की संज्ञा देती है और जिसे दुनिया कमज़ोर और नातवानी कह कर पुकारती है। एक तरफ़ सामान की अधिकता, दूसरी तरफ़ कोई सामान नहीं। इधर मुआहिदे और साज़िशें, उधर तन्हाई की इबादतें, यहां रियासत व सरदारी, वहां फ़ाक़ा व नामुरादी, उस तरफ़ जाह व तजम्मुल, इस तरफ़ फ़क़्र व तवक्कुल। जो अकेला दुनिया की नज़रों में बेयार व मददगार था उस पर ख़ूब जी भर कर ठट्ठे लगाये गये और जो शान के ऊंचे जत्थे वाले थे उन्होंने पुकार–पुकार कर कहा कि ज़रा सुनना और देखना, इस ग़लत ख़्यालों को तो देखना कि जिसे झोपड़ा भी नसीब नहीं वह महलों के ख़्वाब देख रहा है और जो अपनी बेबसी और बेकसी दूर करने पर क़ादिर नहीं वो दुनिया को हिदायत की राह दिखाने का दावा और मख़लूक़ को सुधार की राह पर लाने का हौसला कर रहा है। ये सब करिश्मे वो दिखाता रहा था, जिसने नमरूद का भेजा एक मच्छर के ज़रिये से पाश–पाश कर दिया था। जिसने अबरहा के हाथियों को छोटी–छोटी चिड़ियों की ख़ुराक़ बना दिया था।

दुनिया ने कुछ ही दिनों के बाद क्या नज़ारा किया? इस चौदह सौ बरस की मुद्दत में देखती चली आ रही है? अबू जहल की कब्र का भी कहीं निशान है? अबू लहब का मज़ार कोई आज तक तलाश कर सका? आस बिन वायल की औलाद आज दुनिया के किसी खित्ते में आबाद हैं? उमैया बिन ख़लफ़ के कारनामों की दाद आज तारीख़ का कौन सा तलबा दे रहा है। वलीद बिन मुग़ैरा के फ़ज़ाएल व मनाक़िब का चर्चा आज किस ज़बान पर है? उक्बा की औलाद आज दुनिया के किस हिस्से पर आबाद हैं? कुरैश की रियासत और मक्का के सरदारों की सरदारी की गर्द तक भी बाक़ी है?पूरी ज़मीन के किसी ख़ानदान को आपने पाया है जो अपने नसब का शिजरा इन बाग़ियों से जोड़ रहा हूं? लेकिन उस यतीम के ज़िक्र व याद का ये आलम है कि:

तुम्हारे नाम की रट है ख़ुदा के नाम के बाद
सल्लल्लाहु अलैहि वस्सल्लम

अगर मुहम्मद स०अ० न होते ....

अगर मुहम्मद स०अ० न होते तो किसी को न दीन की कोई फ़ज़ीलत हासिल होती न ईमान व यक़ीन का कोई हिस्सा नसीब होता और न किसी चीज़ के हैरतअन्गेज़ कारनामे सामने आते जो इतिहास के लिये गौरान्वित आभास कराने वाली पूजीं हैं और जिन पर मुसलमानों को बजा तौर पर नाज़ है।

(हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०)

मानवाधिकार का हनन और दुनिया की ख़ामोशी

मौलाना सैय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

मानवाधिकार का हनन स्वयं मानवाधिकार की रक्षक संस्थाओं के साये में जारी है। लम्बे अर्से से जारी क़त्ल व लूटपाट के नतीजे में इन्सानी जान व माल के नुक़सान पर मानवाधिकार आयोग की ख़ामोशी आये दिन देखने को मिलती है। हालात तो अब यहां तक बिगड़ चुके हैं कि बच्चे, औरते, बूढ़े और विकलांग लोग भी इस दरिंदगी का निशाना बनाये जा रहे हैं। मीडिया के द्वारा ये ख़बरे घर–घर पहुंच रही हैं। लेकिन कोई भी व्यक्ति इससे बेचैन व विचलित नज़र नहीं आता।

अरब स्प्रिंग (अरब क्रान्ति) के नाम से नामित ये क्रान्तियां जिनके बारे में कहा जा रहा था कि ये जनता के लाभ के लिये हैं और ये समझा जा रहा था कि जहां जहां क्रान्ति आयेगी वहां वहां तानाशाही का समापन होगा। एक नये सूरज का उदय होगा जो साम्राज्यवादी व्यवस्था के अंधेरों को छांट कर रख देगा। लेकिन इन क्रान्तियों के नतीजे आशा के विपरीत सामने आये। जनता का ख़ून बहा, मासूम बच्चों के चेहरों की मुस्कुराहट छिनी, डर और ख़ौफ़ का वातावरण बना और मुसलमान आपस में बंटते चले गये। मानो पूरा देश अखाड़ा बन गया जहां हर व्यक्ति कुश्ती के लिये तैयार था। क़ुरआन इसकी तस्वीर पेश करता है: (उनके घरों को बर्बाद करते हैं अपने हाथों से)

इस्लाम ने अरब देशों को इस्लाम परचम के तले एकता की लड़ी मे पिरो दिया था, लेकिन वहां के राजनेताओं ने जातिवाद का नारा लगा कर, पश्चिमी सोच को अपनाकर और पश्चिमी व्यवस्था को स्वीकार करके उनकी एकता को तार–तार कर दिया। इसीलिये वहां की जनता विभिन्नत जातियों व क़ौमों में बंट गयी। जातिवाद के आधार पर उनकी अलग–अलग यूनिट बन गयी जिससे अलगाव वाद का रूझान पैदा हुआ। जातिगत बंटवारे के बाद क्षेत्रीय आधार पर बंटवारे का क्रम आरम्भ हुआ। फिर फ़िरक़े के आधार पर अलगाव का सिलसिला शुरू हुआ, जिससे देश अलग–अलग ख़ानों में बंट गया। साम्प्रदायिकता बढ़ी और लक्ष्य की प्राप्ति के लिये हिंसा का रूझान पैदा हुआ।

इन देशों में हालात की गंभीरता का आधारभूत कारण बड़े–बड़े देशों की उनमें दख़लअन्दाज़ी है, जिसने वहां गृहयुद्ध की स्थिति पैदा कर दी है। अमन को छिन्न–भिन्न करके रख दिया है। उन्होंने पुरानी साम्राज्यवादी व्यवस्था को उखाड़ कर तो रख दिया, किन्तु नयी व्यवस्था को जमाने के लिये कोई कार्यवाही नहीं की। बल्कि यूरोपीय साम्राज्यों ने वहां ऐसे लोगों को बिठाया जो उन्हीं से प्रशिक्षित थे, उन्हीं के आदेशों का पलन करने वाले, और उन्हीं के लक्ष्यों की पूर्ति करने वाले थे। इस बात को स्वयं पश्चिमी चिन्तकों ने प्रकट किया है कि हम शिक्षा व प्रशिक्षण के द्वारा ऐसे लोग पैदा करेंगे जो शासन में आकर हमारे उद्देश्यों की पूर्ति करें और उनकी सोच हमारी सोच के अनुसार हो।

पीड़ा तो ये है कि सयुंक्त राष्ट्र संघ और दूसरी मानवाधिकार संस्थांए भी इन हालात को केवल तमाशाई की हैसियत से देख रही हैं। क्योंकि वो उन ताक़तों के अधीन हैं जिनके हाथ क्रान्ति के पीछे हैं और जो अपने कार्य क्षेत्र को बढ़ा रही हैं।

हैरत की बात तो ये भी है कि इस्लामी देशों के हालात दिन पर दिन बदतर होते चले जा रहे हैं। लेकिन इसके ख़िलाफ़ कोई आवाज़ नहीं उठती और हालात को बेहतर बनाने के लिये वर्तमान इस्लामी नेतृत्व जैसे कि आई सी ओ (**ICO**) या अरब लीग (**Arab League**) की ओर से सुलह कराने के लिये और ख़ूंरेज़ी को रोकने के लिये कोई ठोस क़दम नहीं उठाया जाता है। जबकि एक मुसलमान का क़त्ल और उस पर ज़्यादती उसी प्रकार फ़िरक़ावाराना नारे और पक्षपात ये सारी चीज़ें इस्लामी शिक्षाओं के विपरीत हैं। मुसलमान नेतृत्व की ज़िम्मेदारी है कि उसकी रोकथाम के लिये मैदान पर आये और उसको रोकने का हर संभव प्रयास करें। तुर्की के राष्ट्रपति रजब तैयब उर्दगान अकेले मुस्लिम लीडर हैं जिन्होंने खुलकर इसकी निंदा की और अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं की चुप्पी पर आश्चर्य प्रकट किया और उसके लिये ऐसे प्लेटफ़ार्म का प्रयोग किया जो शांति की स्थापना के लिये ही स्थापित किया गया था और जिसकी बुनियादी ज़िम्मेदारी है कि कहीं भी अमन को नुक़सान पहुंचे तो वो दख़ल दे। इससे पहले बहुत से मौक़े पर वो अपनी इस ज़िम्मेदारी को निभा चुका है। वो प्लेटफ़ार्म सयुंक्त राष्ट्र संघ है। वहां भाषण देते हुए उन्होंने अपने जिन विचारों को व्यक्त किया उसके कुछ हिस्सों की चर्चा यहां की जाये तो स्थिति पर रोशनी पड़ती है।

तुर्की के सदर उर्दगान ने संयुक्त राष्ट्र के जलसे को सम्बोधित करते हुए कहा "ऐसे वक़्त में जब कि जनता की ओर से चुने गये शासन का तख़्ता सैन्य क्रान्ति के द्वार पलट दिया गया, हज़ारों लोग सेना की गोली का निशाना बन गये और संयुक्त राष्ट्र और धर्मनिरपेक्ष देशों ने सत्ता के इस बदलाव को न केवल ये कि एक तमाशाई की हैसियत से देखा बल्कि ग़ैर इख़लाक़ी, ग़ैर इन्सानी और ग़ैर क़ानूनी अमल को क़ानूनी हैसियत देकर तस्लीम भी कर लिया। अगर हम लोकतन्त्र का सम्मान करते हैं तो हमको वोटिंग के द्वारा चुने गये लोगों का सम्मान करना होगा। अगर आप लोकतन्त्र का सम्मान नहीं करते तो और क्रान्तिकारी नारे लगाने वाले आप भी शामिल होते हैं तो सयुंक्त राष्ट्र का क्या काम?

उन्होने कहाः बेफ़िक्री की नीदं सोना, बच्चों के क़त्ल पर बेचैन न होना, और दोरूख़ी पॉलिसी अख़्तियार करना भी अस्ल में आतंकवाद की मदद करने के बराबर है और उसको आक्सीजन पहुंचाने जैसा है। उन्होनें कहा कि दुनिया का बड़ा हिस्सा जिसने अपनी उम्मीदें सयुंक्त राष्ट्र से जोड़ ली थीं। उम्मीदों के पूरा न होने पर मायूस होकर आतंकवाद का शिकार बन गये।

उन्होंने कहाः हम इक्कीसवीं सदी में क़दम रख चुके हैं। लेकिन भुखमरी का शिकार हैं। तरह–तरह की जानलेवा बीमारियों में पड़े हैं और ये कि बच्चे और औरतें बहुत ही बेरहमी से क़त्ल किये जा रहे हैं। उन्होंने और कहाः ऐसे समय में जबकि मालदार देश अपने ख़ुशहाल जीवन मे मस्त हैं। वहीं दूसरी ओर ग़रीब देश भूख और ग़रीबी का शिकार हैं। वहां की जनता ज़हरीली ग़िज़ाओं पर गुज़ारा करने पर मजबूर हैं। वहां जिहालत आम हैं। वातावरण का बदलाव हमारी दुनिया और हमारे बच्चों के भविष्य के लिये बड़ा ख़तरा बन सकता है। सयुंक्त राष्ट्र को इसका एहसास होना चाहिये। उन्होंने कहा कि किसी को ये बात शोभा नहीं देती कि वो अपनी दुनिया में मस्त और मगन रहे जबकि उसका भाई मुसीबत में पड़ा हो।

उन्होंने और कहाः सत्तरा हज़ार बच्चे सीरिया में मौत का निवाला बन गये। तीन सौ पिचहत्तर जख़्मी हुए। उन्नीस हज़ार विकलांग हो गये। चार सौ नब्बे मासूम बच्चे फ़िलिस्तीन के ग़ाज़ा में शहीद कर दिये गये और तीन हज़ार जख़्मी हुए।

उन्होंने कहाः ये सारे जुर्म दुनिया की निगाहों के सामने हो रहे हैं, औरतें इस हाल में क़त्ल की जा रही हैं कि उनकी गोद मे उनके दूध पीते बच्चे हैं। मीडिया भी उनके जुर्मों को ख़ूब दिखा रहा है। टेलीविज़न इसको दिखा रहे हैं, बच्चे खेल के दौरान क़त्ल किये जा रहे हैं। और अब तो हाल ये हो गया है कि जो भी उन मासूम बच्चों के हक़ में आवाज़ उठाता है और इस दरिन्दगी को रोकने की कोशिश करता है, उस पर झूठे इल्ज़ाम लगाये जाते हैं और आख़िर में आतंकवाद की मदद करने का आरोप लगाकर उसको ख़ामोश करने की कोशिश की जाती है।

उन्होंने कहाः जो लोग इन जुर्मों और इन हक़ीक़तों को देख रहे हैं और ख़ामोश हैं और बच्चों और औरतों के क़त्ल के ख़िलाफ़ आवाज़ नहीं उठाते वो हक़ीक़त में इस जुर्म में शरीक है।

उन्होंने कहाः हुकूमत का अन्जाम सलामती कौन्सिल में वीटो पावर रखने वाले देशों में से एक देश पर आधारित हो गया है जिससे ताक़त का बैलेंस बिगड़ गया है। उन्होंने कहा कि ग़ाज़ा में दो हज़ार बेगुनाहों और सीरिया में दो लाख बेकुसूरों के क़त्ल पर सलामती कौन्सिल की ख़ामोशी उसकी नाकामी का मुंह बोला सुबूत है।

ताएफ़ की दुआ

ताएफ़ के सफ़र के मौक़े पर आप स०अ० के साथ जो बदसुलूकी की गयी, आपका जिस तरह से दिल दुखाया गया, उस पर आपने जिस अन्दाज़ में अल्लाह तआला से अपनी बेबसी और बेकसी की फ़रियाद की है वो अल्लाह से ताल्लुक़ का बहुत ही बेहतरीन नमूना है। आप स०अ० के शब्द थे:

"इलाही तेरे ही सामने अपनी कमज़ोरी, बेसरो सामानी और लोगों में तहक़ीर की बाबत फ़रियाद करता हूं, तू सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है। दर्दमन्दों और आजिज़ों का मालिक तू ही है और मेरा मालिक भी तू ही है। तू मुझे किसके सुपुर्द करता है?क्या बेगाना तर्श रोके, या उस दुश्मन के जो मुझ पर मुसल्लत है, अगर मुझ पर तेरा ग़ज़ब नहीं तो मुझे किसी चीज़ की परवाह नहीं, क्योंकि तेरी आफ़ियत मेरे लिये सबसे बड़ी पनाहगाह है। मैं तेरी ज़ात के उस नूर के ज़रिये पनाह चाहता हूं जिससे सारी तारीकिया रोशनी में बदल जाती हैं और जिससे दीन व दुनिया के सारे काम ठीक हो जाते हैं इस बात से कि तेरा ग़ज़ब मुझ पर उतरे या तेरी नाराज़गी का मुझको सामना करना पड़े, बस मुझे तेरी ही रज़ामन्दी की ज़रूरत है और नेकी करने या बुराई से बचने की ताक़त तेरी ही तरफ़ से मिलती है।"

ख़ुफ़्फ़ैन पर मसह करने के एहकाम

मुफ्ती राशिद हुसैन नदवी

मसह के माने तर हाथ फेरने के हैं और ख़ुफ़ उस मोज़े को कहते हैं जो चमड़े से बनाया जाये और टख़्नों समेत पूरे पैर को बन्द कर रहा हो। कुरआन मजीद की वज़ू की आयत में पैरों को धोने का हुक्म दिया गया है। लेकिन आप स0अ0 ने जैसा कि बहुत सी हदीसों में है ख़ुद भी मसह फ़रमाया और उसकी इजाज़त भी दी गयी। इसलिये इसको जायज़ मानना अहले सुन्नत की पहचान में से गिना जाता है। जबकि शिया इसके क़ायल नहीं है। लेकिन उनके इख़्तिलाफ़ से कोई फ़र्क़ पड़ने वाला नहीं है जबकि सही हदीस में कसरत से इसका ज़िक्र है। अल्लामा नववी रह0 फ़रमाते हैंः "सहमति में जिन लोगों का एतबार किया जाता है उनकी ख़ुफ़्फ़ैन पर मसह के मामले में सहमति है" सफ़र में भी, अक़ामत की हालत में भी चाहे किसी हाजत की वजह से हो या बिला ज़रूरत यहां तक कि घर में रहने वाली औरत और अपंग के लिये भी जिसको चलना भी नहीं होता। हाफ़िज़ इब्ने हजर रह0 फ़रमाते हैं, "हदीस याद करने वालों की एक जमाअत ने साफ़ किया है कि ख़ुफ़्फ़ैन पर मसह करना तसलसुल से साबित है, कुछ लोगों ने उसकी रिवायत को जमा किया तो वह अस्सी (80) से बढ़ गयीं।"

इन्हीं रिवायतों में एक वो रिवायत भी है जिसको बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत मुग़ैरा रज़ि0 के हवाले से नक़ल किया गया है, फ़रमाते हैंः "एक बार नबी करीम स0अ0 ने सफ़र के दौरान वज़ू फ़रमाया, और मैं आप स0अ0 पर पानी डाल रहा था, आप स0अ0 ने ऐसा शामी जुब्बा पहन रखा था जिसकी आस्तीने तंग थीं, जिसकी वजह से आप स0अ0 ने अपने दोनो हाथ दामन के नीचे से बाहर निकाले और आप स0अ0 ने ख़ुफ़्फ़ैन पर मसह फ़रमाया, मैंने अर्ज़ किया कि क्या आप स0अ0 पैर धोना भूल गये, इस पर आप स0अ0 ने फ़रमायाः बल्कि तुम ख़ुद भूल गये, मेरे रब ने मुझे इसी का हुक्म दिया है।"

इसी तरह बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह में हम्माम नख़ई रह0 से रिवायत है कि हज़रत जरीर इब्ने अब्दुल्लाह रज़ि0 ने पेशाब किया, फिर वज़ू किया और ख़ुफ़्फ़ैन पर मसह किया। कहा गया कि आप ये कर रहे हैं जबकि आपने पेशाब किया था, फ़रमायाः हाँ! मैंने रसूलुल्लाह स0अ0 को देखा कि आप स0अ0 ने पेशाब किया, फिर वज़ू किया और ख़ुफ़्फ़ैन पर मसह किया।

ख़ुफ़्फ़ैन पर मसह के जायज़ होने की शर्तें

ख़ुफ़्फ़ैन पर मसह के जायज़ होने की कई शर्तें हैं जिनको हम नीचे ज़िक्र कर रहे हैं। उनमें से कोई एक शर्त भी न पायी जाये तो ख़ुफ़्फ़ैन पर महस करना जायज़ नहीं होगा।

1. टखनों समेत पूरे पैर को छिपाये यानि पैर के उस पूरे हिस्से को जिसे वज़ू में धोना ज़रूरी है।
2. दोनों मोज़े पैरों की बनावट पर बनाये गये हों बहुत ज़्यादा बड़े न हों।
3. इतने मज़बूत हों कि उनको पहन कर जूता चप्पल पहने बग़ैर लगभग (5 किमी 486 मीटर) चला जा सकता हो।
4. इतने मोटे हों कि किसी चीज़ से रोके बग़ैर पैरों पर रुक जाते हों।
5. इतने मोटे हों कि पानी पैरों तक न पहुंचने दें।
6. ख़ुफ़्फ़ैन को पूरी पाकी हासिल करने पर पहना जाये। इसीलिये अगर बे वज़ू था, ख़ुफ़्फ़ैन पहन ली तो, वज़ू करते वक़्त ख़ुफ़ निकालनी पड़ेगी।
7. मसह करने वाला नजिस न हो। नजिस होने पर ख़ुफ़ निकाल कर पैरों को धोना ज़रूरी होगा।

इन शर्तों में से बहुत सी साफ़ हदीसों से साबित हैं। जैसे पाकी पर पहनने का ज़िक्र हज़रत मुग़ैरा रज़ि0 की हदीस में है, फ़रमाते हैंः एक सफ़र में मैं रात को नबी करीम स0अ0 के साथ में था, मैंने बर्तन में पानी डालकर आप स0अ0 को वज़ू कराया, आप स0अ0 ने अपना चेहरा और कलाइयां धोईं और सर का मसह किया, मैं झुका ताकि आप स0अ0 के ख़ुफ़ निकाल दूं तो आंहज़रत स0अ0 ने फ़रमायाः उनको छोड़ दो, मैंने उनको पाकी की हालत में दाख़िल किया था, अतः आप स0अ0 ने ख़ुफ़्फ़ैन का मसह फ़रमाया। (बुख़ारी/मुस्लिम)

जहां तक बाक़ी शर्तों का संबंध है तो उनमें से अक्सर को फ़ुक़्हा ने आंहज़रत स0अ0 की ख़ुफ़्फ़ैन से जोड़ करके बयान फ़रमाया है, उनका ज़िक्र सराहत से हदीसों में

आया है लेकिन चूंकि कुरआन मजीद में अस्ल हुक्म पैर धोने का है लिहाज़ा इहतियात इसी में है कि हम मसह उसी वक़्त करें जब ख़ुफ़ आंहज़रत स0अ0 की ख़ुफ़ जैसी हो। उन शर्तों क लिहाज़ रखा जाये तो इन्शाअल्लाह मुमासलत हो जायेगी।

मसह की जगह

ख़ुफ़्फ़ैन पर मसह करना हो तो उनके ऊपरी हिस्से पर मसह किया जायेगा। इसलिये कि अबूदाऊद, तिरमिज़ी, मुसनद अहमद में हज़रत मुग़ैरा रज़ि0 की हदीस है, फ़रमाते हैं: "मैंने आप स0अ0 को ख़ुफ़्फ़ैन के ज़ाहिर पर मसह करते हुए देखा।" और अबूदाऊद में हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत है, फ़रमाते हैं: "अगर राय (अक़्ल) से दीन पर अमल करना होता तो ख़ुफ़ का निचला हिस्सा ऊपरी हिस्से के मुक़ाबले में ज़्यादा मसह करने के लायक़ होता, मैंने रसूलुल्लाह स0अ0 को ख़ुफ़्फ़ैन के ऊपरी हिस्से पर मसह करते हुए देखा।"

महस का तरीक़ा

मोज़े अगर चमड़े के हों तो उसी को ख़ुफ़ कहते हैं, उसके आदेश ऊपर बयान किये गये हैं और अगर चमड़े के नहीं हैं, सूती या ऊनी हैं लेकिन उनके तलवे या ऊपरी हिस्से पर चमड़ा लगा है तो वो भी ख़ुफ़ के हुक्म में हैं और उस पर मसह ख़ुफ़्फ़ैन की ही तरह जायज़ है।

(शामी: 197/1)

और अगर सूती या ऊनी मोज़े उस तरह के तो नहीं हैं मगर इतने दबीज़ हैं कि उन्हें पहन कर ऊपर बयान की गयी दूरी तय की जा सकती है और ऐसे पारदर्शी नहीं हैं कि उनमें पानी छन सके और ये कि बग़ैर किसी लास्टिक वग़ैरह के पिंडली पर टिक सकते हों तो ख़ुफ़ की शर्त पूरी कर रहे हैं। लिहाज़ा उन पर मसह करना जायज़ होगा। अब उलमा बिला शर्त मौजू पर मसह के जवाज़ के क़ायल हैं। उनका कहना है कि आप स0अ0 से मौज़ू पर मसह करना साबित है और इस हदीस में इस तरह की शर्तें नहीं है। लेकिन यहां के अक्सर उलमा जिनमें अहले हदीस के उलमा भी हैं इससे मना करते हैं उनका कहना है कि ये हदीस इस दर्जे की नहीं है कि उसकी बुनियाद पर कुरआन की आयत को छोड़कर मसह का जवाज़ किया जाये। अल्बत्ता ख़ुफ़ पर मसह की इजाज़त हदीस मुतवातिरह से साबित है। हदीस मुतवातिराह के ज़रिये ये अमल किया जा सकता है। लिहाज़ा मौज़ू पर उसी वक़्त मसह किया जाये जब वो ख़ुफ से दबीज़ हों ताकि उनको ख़ुफ़ का हुक्म हासिल हो जाये। ये शर्त न पायी जाये तो बेहतर यही है कि कुरआन के हुक्म पर अमल किया जाये।

मसह की मुद्दत

मुक़ीम के लिये मसह की मुद्दत एक दिन एक रात यानि 24 घन्टे है और मुसाफ़िर के लिये तीन दिन तीन रात यानि 72 घन्टे है। ये भी ज़हन में रहे कि इस 24 घन्टे या 72 घन्टे की शुरूआत ख़ुफ या मोज़े पहनने के वक़्त से नहीं होती है। वज़ू टूटने के वक़्त से होती है। अतः अगर किसी ने वज़ू करके ख़ुफ़ पहनी, फिर उसके एक घन्टे बाद वज़ू टूट गया तो उस मुद्दत की शुरूआत वज़ू टूटने से होगी। (शामी: 197/1) इसीलिये हज़रत सफ़वान इब्ने असाल रज़ि0 से रिवायत है: "हमें नबी करीम स0अ0 ने हुक्म दिया कि जब हमने तहारत के साथ ख़ुफ़ पहनी हो तो मुसाफ़िर हों तो तीन दिन और मुक़ीम हों तो एक दिन एक रात मसह करें और नजासत पेश आने पर उतार दें।"

और मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत शुरैह इब्ने हानी से रिवायत है कि मैंने हज़रत आयशा रज़ि0 से ख़ुफ़्फ़ैन के मसह के बारे में पूछा तो उन्होंने फ़रमाया: हज़रत अली रज़ि0 से पूछो। इसके बारे में वो मुझसे ज़्यादा इल्म रखते हैं। वो आप स0अ0 के साथ सफ़र किया करते थे, तो मैंने हज़रत अली रज़ि0 से पूछा, उन्होंने फ़रमाया कि आंहज़रत स0अ0 ने फ़रमाया: "मुसाफ़िरों के लिये तीन दिन तीन रात हैं और मुक़ीम के लिये एक दिन एक रात।"

मसह तोड़ने वाली चीज़ें

1. वो सभी चीज़ें जिनसे वज़ू टूट जाता है, उनसे मसह टूट जायेगा यानि वज़ू करते वक़्त फिर से मसह करना होगा।

2. पूरे मोज़े उतार दिये या पैर का अक्सर हिस्सा बाहर निकाल लिया तो ख़ुफ़ निकाल कर फिर से पैर धोना होगा।

3. मसह की मुद्दत निकल गयी तब भी मोज़े निकाल कर फिर से पैर धोये।

4. किसी एक पैर के अक्सर हिस्से पर पानी पहुंच जाये तब भी मोज़े निकाल कर फिर से पैर धोइये।

पैर की तीन छोटी उंगलियों के बराबर कोई एक मोज़ा फट जाये तब भी पैर निकाल कर धोना ज़रूरी होगा।

मीलाद

इस्लामी शरीअत की नज़र में

डॉक्टर हाफ़िज़ हारून रशीद सिद्दीकी

मीलाद क्या है?

आम तौर पर मीलाद उसे कहते हैं कि कुछ लोगों को जमा किया जाये। उनके बैठने का मुनासिब इन्तिज़ाम हो। ख़ुशबू इत्यादि का इन्तिज़ाम हो। रात हो तो रोशनी की पर्याप्त व्यवस्था की गयी हो। कोई आलिम या ग़ैर आलिम ज़बानी या किसी किताब से अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद स0अ0 की ज़िन्दगी के हालात और आप स0अ0 से ज़ाहिर होने वाले चमत्कारों इत्यादि का बयान करे। आप की पैदाइश का ज़िक्र करे फिर सब लोग एक साथ खड़े होकर बुलन्द आवाज़ में आप स0अ0 पर दरूद व सलाम पढ़ें, फिर बैठ कर दुआ करें, आप स0अ0 को ईसाले सवाब करें, आख़िर में शीरीनी इत्यादि बाटी जाये।

मीलाद पढ़ने वाले के बैठने के लिये तख़्त इत्यादि भी बिछाया जाता है। जिस पर हैसियत के अनुसार फ़र्श बिछाया जाता है। बयान के दौरान नातें और क़सीदे इत्यादि भी पढ़ें जाते हैं। बस इस शक्ल को मीलाद या मौलूद या महफ़िल–ए–मीलाद इत्यादि का नाम दिया जाता है।

देहातों और क़स्बों में आम तौर पर कोई मामूली पढ़ा–लिखा मीलाद पढ़ने वाला मीलाद की किसी किताब से मीलाद पढ़ देता है।

शहरों की मीलाद की महफ़िलें अब तो बहुत ज़्यादा धूम–धाम से की जाती हैं। जलसे की जगह और उसके आस–पास को बल्कि कुछ क़स्बों और शहरो में क़स्बे या शहर के बड़े हिस्से को ख़ूब सजाया जाता है। ख़ूब रोशनी का इन्तिज़ाम किया जाता है। लाउड स्पीकरों का इन्तिज़ाम किया जाता है। बहुत से तक़रीर करने वालों को बुलाया जाता है जो सीरत पर तक़रीरें करते हैं। नातिया मुशाअरा इत्यादि की व्यवस्था की जाती है। पूरी रात बयानात और नात इत्यादि पढ़ने में बिता दी जाती है। आख़िर में सलात व सलाम पर मजलिस समाप्त होती है।

मीलाद की महफ़िलें ऐसे तो साल के किसी महीने और किसी तारीख़ में होती रही हैं। लेकिन चूंकि हुज़ूर अकरम स0अ0 की पैदाइश मशहूर क़ौल के अनुसार 12 रबीउल अव्वल को हुई थी इसलिये इस महीने में और ख़ास तौर पर 12 रबीउल अव्वल को मीलाद की महफ़िलों का बड़ा इहतिमाम किया जाता है।

मीलाद का इतिहास

बहुत से लोगों को ये जानकर ताज्जुब होगा कि सहाबा किराम के ज़माने में हमारे ज़माने जैसी मीलाद की मजलिसों का कहीं ज़िक्र नहीं मिलता और ये इसीलिये कि आप स0अ0 ने ऐसी मीलाद की महफ़िलों की तालीम नहीं दी थी। मीलाद की महफ़िलों का सिलसिला तो आप स0अ0 के विसाल के कई सौ बरस बाद शुरू हुआ है। इस बात को मीलाद के पक्षधर उलमा भी स्वीकार करते हैं और विरोधी भी। अल्लामा मुहम्मद बिन अली यूसुफ़ दमिश्क़ी शामी ने किताब सुबुलुल हुदा वर्रिशाद फ़ी सीरतुल ख़ैरुल उब्बाद जो सीरत–ए–शामी के नाम से मशहूर है में लिखा हैः (सबसे पहले उमर बिन मुहम्मद ने मोसल में मीलाद किया था जो नेक लोगों में मशहूर थे और उनकी पैरवी की थी मीलाद में सुल्तान अरबल ने) (तारीख–ए–मीलादः 15)

मुख़ालिफ़–ए–मीलाद के मुवाफ़िक़ में एक मशहूर शख़्सियत मौलाना अब्दुस्समी साहब रह0 की है। उन्होंने अपनी किताब "अनवार सातिआ" में स्वीकार किया हैः "ये सामाने फ़रहत व सरवर करना और उसको भी मख़सूस महीने रबीउल अव्वल के साथ और उसमें भी ख़ास वही बारहंवा दिन मीलाद शरीफ़ का तय करना बाद में हुआ यानि छठी सदी हिजरी के आख़िर में।" (अनवार सातिआः 159)

अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी रह0 सीरतुन्नबी भाग–2, पेज–664 (द्वितीय प्रकाशन) में लिखते हैंः "इस्लाम में मीलाद की मजलिसों का आरम्भ ग़ालिबन चौथी सदी हिजरी से हुआ।"

मीलाद की दीनी हैसियत

जब इन मीलाद की महफ़िलों का वजूद न रसूले ख़ुदा की तालीम में मौजूद है न सहाबा किराम के अमल में न अइम्मा मुजतहिद्दीन इमाम अबू हनीफ़ा रह0, इमाम मालिक व इमाम शाफ़ई और इमाम अहमद बिन हम्बल रह0 के ज़माने में। ज़ाहिर है कि मीलाद की महफ़िल को दीनी इस्तलाहात से कोई दर्जा देना मुश्किल होगा। फ़र्ज़ व वाजिब का तो सवाल ही नहीं, सुन्नत भी नहीं। अल्बत्ता कुछ लोगों ने मुस्तहब या मुबाह कहा है, वो भी नियमों व सीमाओं के साथ। इसीलिये मौलाना अब्दुल हयि फ़िरन्गी महली मजमूआ फ़तावा जि0–1 पेज–45 में लिखते हैंः (हां अगर मौलूद जिसका ज़िक्र गुज़र चुका है उसमें ऐसी चीज़ों को ख़ास किया जाये जो शरीअत में जायज़ न हो और ऐसी चीज़ें शामिल की जायें जिनका हुक्म शरीअत में न हो तो उसके बेहतर होने का हुक्म बाक़ी न रहेगा) यानि उनके

नज़दीक मौजूद बेहतर यानि मुस्तहब है जबकि मुन्हबात (जिन चीज़ों से रोका गया हो) से पाक हो।

मौलाना रशीद अहमद गंगोही फ़तावा रशीदिया जि0: 1 पेज: 142 पर लिखते हैं: (रायज मजलिस जिसको सवाल करने वाले ने लिखा है बिदअत व मकरूह है अगरचे नफ़्स जिक्रे विलादत फ़ख्र–ए–आलम स0अ0 बेहतर है मगर उनके साथ इन सारी क़ैदों के लगने से ये मजलिस ममनूअ हो गयी)

आजकल वो उलमा जो हर हाल में मीलाद के हक़ में हैं। वो मीलाद के हिस्सों जैसे आप स0अ0 का ज़िक्र करना, आप स0अ0 पर दरूद व सलाम पढ़ना, ग़रीबों को खाना खिलाना, इत्यादि की अलग–अलग दलीलें देकर सामूहिक रूप से मीलाद को सही साबित करते हैं। ये उनकी बड़ी जुर्रत है। सोचिये अगर कोई शख़्स नफ़िल नमाज़ में सूरह फ़ातिहा के बाद दरूद शरीफ़ पढ़ने का मशविरा दे कि वो एक अहम दुआ है और उसमें अल्लाह ही से दरख़्वास्त होती है और दरूद पढ़ने की दलील कुरआन मजीद की आयत से दलील दे तो क्या इस मौक़े के लिये उसकी इस दलील को सही समझा जायेगा। ये तो इस ज़माने के उलमा की जुर्रात है वरना पुराने उलमा की जिन्होंने मीलाद को अपनाया उन्होंने इस तरह इस्तदलाल नहीं किया। इसीलिये इमाम जलालुद्दीन सूयूती रह0 ने हसनुल मक़सद में साफ़ लिखा है (मीलाद के जायज़ होने में नस नहीं सिर्फ़ क़यास है) एक और जगह लिखते हैं, "इसी तरह हम कहते हैं कि अस्ल इज्तिमा इज़हारे मीलाद के लिये बेहतर व कुर्बत है और जो बुरी बातें इसमें मिल गयीं हैं वो मज़मूम व मना हैं।"

महफ़िल–ए–मीलाद में क़याम

पहले जो मीलाद की महफ़िलें आयोजित की गयीं तो उनमें खड़े होकर दरूद व सलाम पढ़ना नहीं था। बहुत से लोगों ने लिखा है कि अल्लामा तक़ीउद्दीन सबक़ी शाफ़ई (जिनका जमाना 683–756 हिजरी है) से खड़े होने की शुरूआत हुई जैसा कि सीरते जलबिया से नक़ल किया गया है जबकि इनका खड़ा होना मीलाद की महफ़िल के लिये न था, बल्कि महफ़िले दर्स का था। जिसमें एक क़सीदा पढ़ा गया था। जिसमें एक शेर इस तरह था:

(और ये कि खड़े हुए अशराफ़ आप स0अ0 का ज़िक्र सुनने के लिये क़याम करके सफ़ ब सफ़ या वो घुटनों के बल खड़े हो जायें)

ये खड़ा होना न तो मीलाद की महफ़िल का था। न विलादत के ज़िक्र के वक़्त था। बस ये शेर सुनकर बुजुर्ग पर कैफ़ियत तारी हो गयी और वो खड़े हो गये।

लेकिन आज तो मीलाद में खड़े होने से अजीब–अजीब अक़ीदत जुड़ गयी हैं, कहा जाता है कि आप स0अ0 मीलाद की महफ़िल में तश्रीफ़ लाते हैं। उनकी ताज़ीम में खड़े होते हैं। कुछ लोग इसके अलावा वो बातें बयान करते हैं जिनकी कोई शरई दलील नहीं है। किसी बयान से किसी पर कोई हाल तारी हो जाये और वो खड़ा होकर दरूद व सलाम पढ़ने लगे तो उसके पास बैठे हुए लोग अगर उसकी रिआयत से उसका साथ दे दें तो कोई हर्ज की बात न थी। लेकिन क़याम मीलाद को ज़रूरी क़रार देना और उसे तर्क करने वालों को लानत मलामत करना बड़ी सख़्त बात है। आजकल मीलाद की महफ़िल में बहुत सी ऐसी–ऐसी चीज़ें शामिल कर ली गयी हैं जो सब अपनी जगह पर या तो हराम हैं या मकरूह। जैसे मीलाद के लिये चन्दा वसूल करते समय चन्दा न पाने वालों को या न देने वालों को शर्मिन्दा करना। चन्दा वसूल कर उसे बेजा ख़र्च करना। जैसे बे ज़रूरत बहुत ज़्यादा रोशनी और सजावट का एहतिमाम करना। नाजायज़ कमाई का पैसा भी मीलाद के चन्दे में ले लेना मीलाद के बयान में मौसूल का बयान करना। आप स0अ0 के तरीक़े को छोड़ने वाले शायर को बुलाकर उनसे नातें पढ़वाना। मीलाद के बयान में दूसरे उलमा जिनके नज़दीक मीलाद बिदअत है और वो अपने दलील में नेक नियत हैं और आप स0अ0 से मुहब्बत रखने वाले हैं। आप स0अ0 की एक एक सुन्नत को मज़बूती से थामने वाले हैं। और उनको बुरा–भला कहना यहां तक कि उन पर कुफ़्र के फ़तवे देना जैसी बेकार बाते मीलाद की महफ़िलों में शामिल हो गयी हैं।

वैसे चाहिये तो ये था कि उन महफ़िलों को बिल्कुल रोक दिया जाये लेकिन कुछ जगहों पर उनका इतना रिवाज है कि उनको बिल्कुल बन्द करना बहुत मुश्किल है। लिहाज़ा उनकी इस्लाह करना बहुत ज़रूरी है। खुदा का शुक्र है कि बहुत से उलमा इस ओर ध्यान दे रहे हैं। और वो ऐसी मजलिसों में तक़रीर के लिये जब ही राज़ी होते हैं जब उसमें बाज़ क़ाबिले इतराज़ बातों की इस्लाह का वादा ले लेते हैं और कुछ उलमा तक़रीर के दौरान मजलिस में पाये जाने वाले मुनकिरात पर खुलकर नकीर करते हैं। मीलाद की जायज़ बल्कि पसंदीदा महफ़िल के बारे में हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी ने जो कुछ फ़रमाया है उसका ज़िक्र यहां मुनासिब मालूम होता है, फ़रमाया: "वो महफ़िल जिसमें रायज क़ैद मे से कोई क़ैद न हो न क़ैदे मुबाह न क़ैदे मकरूह तमाम क़ैद से मुतलक़ हो .....(शेष पेज 17 पर)

नबी–ए–करीम स0अ0 की पत्नियाँ और ओरिएन्टलिस्ट

ओरिएन्टलिस्ट (**Orientalist**) (पूर्वी भाषाओं और ज्ञानों का विद्वान) ने हज़रत नबी करीम स0अ0 की ज़ात पर कई तरह के एतराज़ किये हैं। उनमें से एक एतराज़ पत्नियों की अधिकता पर भी है, जिसका उलमा–ए–हक़ ने संतुष्ट करने वाला जवाब भी दिया है। लेकिन अभी भी बहुत से अलग सोच रखने वाले लोग जो वास्तविकता से अनभिज्ञ होते हैं, वाक़्यों का निष्पक्ष निरीक्षण किये बग़ैर और रहमतुल लिल आलमीन स0अ0 की महानता और पद का लिहाज़ रखे बग़ैर इशारों–इशारों में ऐसे विचार प्रकट करते रहते हैं। अक़्ल व इन्साफ़ का बेहतर तरीक़ा तो ये है कि किसी मसले के हर एक पहलू को ध्यान में रखकर फ़ैसला किया जाये।

यदि ओरिएन्टलिस्टों के एतराज़ों को सही मान भी लिया जाये तो भी मुहम्मद स0अ0 की महानता में कोई फ़र्क़ नहीं आता। कारण ये है कि जो प्राकृतिक नियम व क़ानून जनता पर लागू होता है कई बार अल्लाह की मर्ज़ी से अम्बिया–ए–किराम उन नियमों व क़ानूनों के अपवाद होते हैं। हम आपको प्राकृतिक नियमों से ज़रा हट कर एक बुज़ुर्ग नबी हज़रत ईसा अलै0 की मिसाल पेश करते हैं जिनकी पैदाइश तो कुदरत के अख़्तियार के दायरे में थी, किन्तु प्रकृति के नियमानुसार नहीं थी। हज़रत ईसा अलै0 की पैदाइश के बाद लोग मरियम अलै0 के पास आये बच्चे की तरफ़ इशारा करके कहाः ये क्या है? बजाय इसके कि उनकी माँ जवाब देती, बच्चे ने कहाः मैं ख़ुदा का बन्दा हूँ। जबकि यहूदियों ने इस प्रकृति के नियम के विपरीत बच्चे को मानने से इनकार कर दिया, मगर ईसा अलै0 की व्यक्तिगत महानता से ये चीज़ साबित हो गयी। अल्लाह तआला ने उनकी प्रकृति और प्राकृतिक नियम व क़ानून को बदल दिया और इस प्रकार के बदलाव पर अल्लाह पूरी तरह क़ादिर है। ताज्जुब की बात ये है कि ईसाई प्रचारक हज़रत ईसा अलै0 के बारे में तो लोगों से कहते हैं कि संसार के नियमों के बदलाव पर यक़ीन ले आओ, लेकिन आदत के अनुसार इससे कम अजीब वाक़्या जो रसूलुल्लाह स0अ0 से जुड़ा हुआ है, उस पर टिप्पणी करते हैं। हालांकि बड़े लोगों से ऐसी घटनाओं का होना संभव है जो रस्म, इज्तिमा और प्राकृतिक नियमों के विपरीत हैं।

हमें ये देखना पड़ेगा कि हम जिस ज़माने का ज़िक्र कर रहे हैं उस वक़्त अरब क़ौम में क्या रिवाज था। ये तो साफ़ है कि अरबों में पत्नियों की अधिकता को कभी स्पष्ट रूप से मना नहीं किया गया। बस पत्नियों की संख्यां के नये हुक्म आने ये पहले अधिक पत्नियां रखना कोई ऐसा काम न था जिस पर पहले के नबियों या नबी करीम स0अ0 पर टीका टिप्पणी की जा सके।

अल्लाह के रसूल स0अ0 के सुपुर्द जो काम किया गया था वो एक नवनिर्मित क़ौम जो इस्लामी सभ्यता के दृष्टिकोण से तराशी गयी थी, जीवन के हर भाग में शिक्षा व प्रशिक्षण देकर एक श्रेष्ठ धर्म व पवित्र क़ौम बनाएं। इस काम के लिये केवल मर्दों को प्रशिक्षित करना पर्याप्त न था बल्कि औरतों के प्रशिक्षण की भी उतनी ही आवश्यकता थी। इस्लामी नियमों को सिखाने पर जो लोग लगाये गये थे या तो मर्दों और औरतों के बीच मेल–मिलाप पर पाबन्दी थी। मीडिया के लिये अख़बार, रेडिया व टीवी तो थे ही नहीं, ले दे कर औरतों को प्रत्यक्ष रूप से शिक्षित करने के लिये औरतों की ही आवश्यकता थी। और उसका एक मात्र रूप यही हो सकता था कि आप स0अ0 की अपनी प्रशिक्षित की हुई और ज़िम्मेदार औरतें तैयार की जायें, जो सही तरीक़े से औरतों को दीन की तालीम दे सकें। केवल इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर आप स0अ0 ने बहुत सी औरतों से निकाह किये और प्रत्यक्ष रूप से उनको शिक्षा दी ताकि वो उन आलिमाना योग्यताओं के साथ अरब की औरतों में धर्म के प्रचार का काम कर सकें।

इसके अलावा इस्लामी जीवन व्यवस्था स्थापित करने के लिये जीवन व्यतीत करने के जाहिलाना नियमों को अपनाने वालों से जंग करना भी इसका इलाज न था। इन हालात में दूसरे उपायों के साथ–साथ आप के लिये ये भी आवश्यक था कि विभिन्न क़बीलों में निकाह करके लम्बे अर्से से चली आ रही दुश्मनी को ख़त्म करें और नयी दोस्तियों के आधार पर दृढ़ता ला सकें। इसीलिये जिन औरतों से आप स0अ0 ने निकाह किया, उनके चुनाव में ये ध्यान विशेषतयः दिया गया। हज़रत आयशा रज़ि0 और हज़रत हफ़सा रज़ि0 से निकाह करके आप स0अ0 ने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 और हज़रत उमर रज़ि0 से अपने रिश्तों को सुदृढ़ किया। हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 उस ख़ानदान की बेटी थीं जिनसे अबू जहल और ख़ालिद बिन वलीद का संबंध था। हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि0 हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि0 की बेटी थीं। उन शादियों ने बड़ी हद

उन ख़ानदानों की दुश्मनी का ज़ोर तोड़ दिया और इस निकाह के बाद अबू सुफ़ियान कभी आप स0अ0 के मुक़ाबले पर नहीं आये। हज़रत सफ़िया, जवेरिया और रेहाना यहूदी ख़ानदान से थीं। उन्हें आज़ाद करके रसूलुल्लाह स0अ0 ने जब उनसे निकाह किया तो यहूदियों की विभाजनकारी कार्यवाहियां ठन्डी पड़ गयीं। समाज का सुधार और उसकी जाहिलाना रस्मों को समाप्त करना भी आप स0अ0 के फ़राएज़ मन्सबी में शामिल था। इसीलिये आप स0अ0 ने हज़रत ज़ैनब से केवल इसलिये निकाह किया कि अरब में गोद लिये हुए बेटे को विरासत का हक़दार समझा जाता था और उसकी बीवी से निकाह हराम माना जाता था चूंकि ये रस्म व रिवाज हक़ीक़त और शरीअत के ख़िलाफ़ थीं लिहाज़ा आप स0अ0 ने अपने मुंह बोले बेटे हज़रत ज़ैद रज़ि0 से तलाक़ पायी हुई हज़रत ज़ैनब से निकाह करके अमलन इस रस्म को ख़त्म कर दिया।

हज़रत मैमूना रज़ि0 सरदार–ए–नज्द के घर में थी। ये निकाह नज्द में सुलह व आशती और इस्लाम के प्रचार में मील का पत्थर साबित हुआ। हालांकि नज्द वालों ने हमेशा इस्लाम के ख़िलाफ़ फ़साद बरपा किया। ये मस्लहतें इस बात की गवाह थीं कि नबी करीम स0अ0 को जो महान कार्य दिया गया था उसके आवश्यकतानुसार आप स0अ0 ने इसके द्वारा अमन व शांति और धर्म के प्रचार से भी लाभान्वित हुए।

विरोधी कहते हैं कि मुसलमानों को चार बीवियों की इजाज़त है यहां तक कि जिन लोगों के पास चार से ज़्यादा बीवियां थीं तो सूरह निसा के नाज़िल होने के बाद आप स0अ0 ने उनको हुक्म दिया कि चार से ज़्यादा अगर हैं तो उनको अलग कर दो। क़ैस बिन हारिस जब मुसलमान हुए तो उनके पास आठ बीवियां थीं, ग़लयान जब मुसलमान हुए तो उनके पास दस बीवियां थीं, जो उनके साथ मुसलमान हो गयीं थीं। रसूलुल्लाह स0अ0 ने उनको हुक्म दिया कि चार औरतें चुन लें बाक़ी छोड़ दें। मगर स्वयं आप स0अ0 ने चार से ज़्यादा बीवियों को अलग नहीं किया। यहां तक कि जब आप स0अ0 का विसाल हुआ तो नौ बीवियां ज़िन्दा मौजूद थीं। इसका कारण ये है कि अल्लाह तआला ने उन औरतों से जो आप स0अ0 के निकाह में आ चुकी थीं दूसरों को निकाह करने से मना कर दिया था।

(ऐ मुसलमानों! ख़ुदा के पैग़म्बर की बीवियों से उसके बाद निकाह मत करो) (सूरह अहज़ाबः 53)

यही कारण था कि आप स0अ0 ने अपनी किसी बीवी को अपनी ज़ौजियत से निकालना पसंद न फ़रमाया, मगर मुसलमानों की औरतों से ये हुक्म अलग था। इसलिये ख़ुद तो आप स0अ0 ने अपनी सभी बीवियों को अपने निकाह में रखा, मगर जिन मुसलमानों के पास चार औरतों से ज़्यादा निकाह में थीं उनसे कहा कि अगर चार से ज़्यादा हैं तो उनको छोड़ दिया जाये। मानों आप स0अ0 की पत्नियों के बारे में अगर निकाह हुक्मन मना न किया जाता तो इस्लाम में एक बहुत बड़ा फ़ित्ना पैदा हो सकता था। ये औरतें अगर तलाक़ लेने के बाद नयी शादियां करतीं तो वो पति अपने मिज़ाज व मांग के अनुसार सैंकड़ों हदीसें अपनी बीवियों के हवाले से बयान कर सकते थे जो झूठ का शाख़साना बन जाता और इस्लामी हुक्मों में इख़्तिलाफ़ और फुजूर का कारण होता।

ओरिएन्टलिस्टों ने पत्नियों की अधिकता पर तरह तरह के हैरत करने वाली फ़ब्तियां की हैं। उनसे प्रभावित लोग अगर सही सोच के साथ जायज़ा लें कि मुहम्मद स0अ0 की उम्र 63 साल की थी जिसमें से 50 साल की उम्र तक एक औरत से जो दो पतियों से तलाक़ पायी हुई थी पारिवारिक बंधन में बंधे रहे। जिसके इन्तिक़ाल के समय तक दूसरी शादी न की और हज़रत ख़दीजा रज़ि0 के इन्तिक़ाल के बाद एक और कमज़ोर और परेशान बेवा से शादी की। आप सोचिये कि जिस शख़्स ने ज़िन्दगी के शबाब का ज़माना तक़वे के कमाल और निहायत ही परहेज़गारी के साथ गुज़ारा जबकि मक्के की एक मुमताज़ शख़्सियत उत्बा बिन रबिया (जो कि क़बीला बिन अब्दुश्शम्स का सरदार था) ने आप स0अ0 से गुज़ारिश की थी कि मक्के की जिस औरत को कहो और जितनी दौलत कहो देता हूं, मगर इस नये ख़ुदा का ज़िक्र बन्द कर दो जो तुम करते रहते हो। मगर आप स0अ0 ने प्रस्ताव रद्द कर दिया। कोई शख़्स ऐसे महान व्यक्ति के लिये बुरे ख़्याल दिल में ला सकता है कि इस तरवीज की वजह ही थी जो आम तौर पर जवानी के जोश से मन्सूब की जाती है।

अगर इतिहास का गहराई से अध्ययन किया जाये तो साबित हो जायेगा कि ऐश परस्ती तो दूर की बात है आप स0अ0 ने बहुत ही परेशानी व तंगदस्ती की हालत में बेआसरा कमज़ोर औरतों से शादी करके ख़ुद को उनके पालन पोषण का कफ़ील बनाकर महानता का सुबूत दिया है। यक़ीनन अगर इन्सानियत के ज़ाविये निगाह से इन पत्नियों की अधिकता के उद्देश्य का अनुभव किया जाये तो आप स0अ0 पर जो ये इल्ज़ाम आता है उसका बेबुनियाद होना और बेजा होना साबित हो जायेगा।

इस्लामी अक़ीदा

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

रिसालत का अक़ीदा

रिसालत के माने भेजने के हैं और इस्तिलाह में रिसालत पैग़म्बरों के भेजे जाने को कहते हैं। इसका मतलब ये बिल्कुल नहीं है कि पैग़म्बरों को आसमान से उतारा गया है। अल्लाह का निज़ाम ये रहा है कि उसने इन्सानों ही में से किसी किसी का इस काम के लिये चुनाव किया। और आम तौर से जिस क़ौम में सुधार का उद्देश्य होता उसी क़ौम में से किसी का चुनाव होता और नबूवत के लिये अल्लाह उसको चुन लेता। कुरआन मजीद में इसका बहुत सी जगहों पर ज़िक्र मिलता है कि अल्लाह तआला ने नबी का चुनाव उसी क़ौम से किया जिस क़ौम में नबी को भेजना था।

हर ज़माने में और हर क़ौम में नबी आये। अल्लाह ने फ़रमायाः "और कोई क़ौम ऐसी नहीं है जिस पर ख़बरदार करने वाला न गुज़रा हो।" (फ़ातिरः 24) हज़रत आदम अलै0 और हज़रत नूह अलै0 से ये सिलसिला चला और चलता रहा। यहां तक कि अल्लाह ने आख़िरी पैग़म्बर मुहम्मद स0अ0 को भेज दिया। इन सभी पैग़म्बरों के सिलसिले में ये अक़ीदा रखना ज़रूरी है कि ये सब अल्लाह के भेजे हुए बन्दे थे जिनको अल्लाह ने चुन लिया और अपना पसंदीदा बनाया। ये सब मासूम हैं और वही कहते हैं और करते हैं जो उनको अल्लाह की तरफ़ से हुक्म मिलता है। ये हुक्म उनके पास आम तौर पर उनके पास फ़रिश्तों के सरदार हज़रत जिब्राईल अलै0 के ज़रिये आते हैं और बहुत सी बातें अल्लाह तआला सीधे उनके दिलों में डाल देता है या उनको ख़्वाब के ज़रिये बताता है। उनमें से बहुत से रसूलों का ज़िक्र अल्लाह तआला ने कुरआन में फ़रमाया है। उन सबको नबी/रसूल मानना ज़रूरी है। उनमें से पाँच बहुत बड़े पैग़म्बर हैंः 1– हज़रत नूह अलै0 2– हज़रत इब्राहीम अलै0 3– हज़रत मूसा अलै0 4– हज़रत ईसा अलै0 5– सैय्यदना हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह स0अ0। जो उनको रसूल न माने वो मुसलमान नहीं।

इनमें से आख़िरी रसूल स0अ0 जिनकी उम्मत में हमको पैदा किया गया है सब नबियों के सरदार हैं। आप स0अ0 की रिसालत पूरी दुनिया के लिये और क़यामत तक के लिये है। आप स0अ0 पर अल्लाह की वही का सिलसिला मुकम्मल हो चुका है। अब किसी पर वही नही आ सकती है। अगर कोई ये दावा करे कि उस पर वही आती है या उसका इल्हाम वही के दरजे का है और उसकी पैरवी ज़रूरी है तो वो झूठा और गुमराह करने वाला है।

आप स0अ0 के बारे में निम्नलिखित अक़ीदे रखना मुसलमान होने के लिये ज़रूरी है। और ये सब बातों रिसालत के अक़ीदे में शामिल हैं। इनके बग़ैर रिसालत का अक़ीदा ठीक और पूरा नहीं हो सकताः

1– आप स0अ0 अल्लाह के बन्दे हैं।

2– और अल्लाह के रसूल हैं। खुद आप स0अ0 ने इस बात को साफ़ किया है और इसकी ताकीद फ़रमायी हैः (यक़ीनन मैं अल्लाह का बन्दा और रसूल हूं, तो तुम मानो और कहो कि अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं) (बुख़ारीः 3261, अहमदः 397) आप स0अ0 के लिये मेराज के मौक़े पर अल्लाह तआला ने जिन शब्दों का प्रयोग किया, वो अब्द का है, इरशाद होता हैः "वो ज़ात पाक है, जो रातों रात ले गयी अपने बन्दे को मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा की तरफ़।" (बनी–इस्राईलः 1) इसके अलावा भी बहुत सी जगह आप स0अ0 के लिये कुरआन मजीद में अब्द का शब्द इस्तिमाल हुआ, एक जगह इरशाद हुआः "फिर अल्लाह ने अपने बन्दे पर जो वही करनी थी वो उसने की" (नज्मः 10) दूसरी जगह इरशाद हैः "और ये कि जब अल्लाह का बन्दा खड़ा होकर उसको पुकारता है तो वो उस पर ठठ के ठठ लगा लेत हैं" (जिन्नः 19) एक जगह फ़रमायाः "और अगर तुम उस चीज़ के बारे में ज़रा भी शुब्हे में हो जिसको हमने अपने बन्दों पर उतारा है" (बक़रा : 23) रसूल होने से पहले बन्दे होने का ज़िक्र खुद हुज़ूर स0अ0 ने इसलिये फ़रमाया कि बन्दगी जितनी मुकम्मल होगी इन्सान उतना ही कामिल होगा। आप स0अ0 को बन्दगी का जो कमाल हासिल था वो किसी को न हासिल हुआ और न हो सकेगा। इसीलिये जो मक़ाम व मर्तबा आप स0अ0 को हासिल है किसी को न हासिल हुआ और न हो सकेगा।

3– आप स0अ0 सैय्यदुल मुरसलीन हैं। सभी रसूलों के सरदार व इमाम हैं। एक सही हदीस में ख़ुद आप स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः (मैं क़यामत के दिन तमाम इन्सानों का सरदार हूँ और सबसे पहले क़ब्र से मुझे ही निकाला जायेगा और सबसे पहले सिफ़ारिश करने वाला होऊंगा और सबसे पहले मेरी ही शिफ़ाअत कुबूल की जायेगी) (बुख़ारीः 6079, अहमदः 2744)

4– तमाम जहानों में आप स0अ0 अल्लाह को सबसे बढ़कर महबूब हैं। किसी को भी मुहब्बत का ये मक़ाम हासिल नहीं है, जो अल्लाह ने आपको अता फ़रमाया है।

हदीस में आया है: (जिस तरह अल्लाह ने इब्राहीम अलै0 को ख़लील बनाया उसी तरह मुझे भी ख़लील बनाया) (मुस्लिमः 1216) ख़ुल्त मुहब्बत का सबसे बुलन्द मक़ाम है जो अल्लाह ने ख़ास तौर पर आप स0अ0 के अता फ़रमाया है।

5– आप स0अ0 आख़िरी नबी है। नबूवत का सिलसिला आप स0अ0 पर पूरा कर दिया गया। अब कोई नबी आने वाला नहीं है। अल्लाह फ़रमाता है: (अल्बत्ता आप स0अ0 अल्लाह के रसूल और आख़िरी नबी हैं) (अलएहज़ाबः 40) सही हदीस में आप स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः (मेरे बहुत से नाम हैं, मैं मुहम्मद हूं, मैं अहमद हूं, और मैं माही हूं, और अल्लाह मेरे ज़रिये से कुफ़्र को मिटाता है, और मैं हाशिर हूं मेरे (नक़्श) क़दम पर लोग जमा होते हैं और मैं आक़िब हूं, ऐसा आक़िब कि अब मेरे बाद कोई नहीं) (मुस्लिमः 6252)

6– आप स0अ0 को तमाम इन्सानो और जिन्नातों के लिये भेजा गया है। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: "और हमने आपको तमाम ही लोगों के लिये बशारत देने वाला और ख़बरदार करने वाला बनाकर भेजा है" (सबाः 28)

"कह दीजिए कि ऐ लोगो! मैं तुम सबकी तरफ़ उस अल्लाह का पैग़म्बर हूं" (आराफ़ः 157)

"और उस क़ुरआन की वही मुझ पर इसीलिये की गयी ताकि उसके ज़रिये मैं तुम्हें और जिस तक ये पहुंचे उसे ख़बरदार करूँ" (अलईनामः 19)

एक हदीस में आप स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः (नबी अपनी क़ौम की तरफ़ भेजा जाता था और मुझे तमाम लोगों के लिये भेजा गया) (बुख़ारीः 327)

दूसरी हदीस में आता है: (उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है, मेरी इस उम्मत में से कोई भी व्यक्ति मेरे बारे में सुने चाहे वो यहूदी हो या नसरानी हो, फिर वो इस पर ईमान न लाये तो वो जहन्नमियों में से होगा) (मुस्लिमः 403)

7– आप स0अ0 की इताअत वाजिब है। आप स0अ0 की इताअत का लाज़िम समझना, रिसालत पर ईमान लाने का अहम हिस्सा है। इसके बग़ैर कोई मुसलमान नहीं हो सकता है जब तक आप स0अ0 की पैरवी को ज़रूरी न समझे। यहां ये बात साफ़ कर देना भी ज़रूरी है कि आप स0अ0 की इताअत को ज़रूरी समझना ईमान का हिस्सा है और इसका ताल्लुक़ अक़ीदे से है। और अगर कोई इसको नहीं मानता तो वो ईमान से बाहर है। और अगर कोई अक़ीदे के एतबार से इताअत को ज़रूरी तो समझता है लेकिन अमल में कोताही और ग़फ़लत हो जाती है तो वो शख़्स काफ़िर नहीं होगा, फ़ासिक़ और गुनहगार कहलायेगा।

क़ुरआन मजीद में बीसियों जगह आप स0अ0 की इताअत का हुक्म दिया गया है, और उसको ऐन ईमान क़रार दिया गया है। एक जगह इरशाद है: "बस नहीं आपके रब की क़सम! वो उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकते, जब तक कि वो अपने झगड़ों में आपको फ़ैसला करने वाला न बना लें फिर आपके फ़ैसले पर अपने जी में कोई तंगी महसूस न करें और पूरी तरह सर झुका दें।" (अन्निसाः 65) एक जगह इरशाद है: "अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानो अगर तुम वाक़ई ईमान वाले हो" (अनफ़ालः 1) एक जगह फ़रमायाः "आप कह दीजिए कि अल्लाह और रसूल की बात मानो फिर अगर वो मुंह फेर लें तो अल्लाह इनकार करने वालों को पसंद नही फ़रमाता।" (आले इमरानः 32) इस आयत से साफ़–साफ़ ये बात मालूम होती है कि अगर कोई नहीं मानता और मुंह फेरता है तो वो काफ़िर है।

एक जगह विरोध करने वालों को सख़्त अन्जाम से डराया गया है: "और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल से दुश्मनी मोल लेता है बिला शुब्हा अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है।" (अन्फ़ालः 13)

अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में ये भी साफ़ तौर से फ़रमा दिया कि रसूल की इताअत अल्लाह की इताअत है। अगर क़ुरआन मजीद में कोई हुक्म ज़ाहिरी तौर पर न हो और आप स0अ0 ने कोई बात फ़रमायी हो तो वो अल्लाह ही की तरफ़ से समझी जायेगी और उसको मानना ज़रूरी है। अल्लाह फ़रमाता है: "जिसने रसूल की इताअत की तो उसने अल्लाह की इताअत की।" (अन्निसाः 80)

8– आप स0अ0 बशर हैं। क़ुरआन मजीद में कई जगह इसको साफ़ तौर से बयान किया गया है। सूरह कहफ़ की आख़िरी आयत में इरशाद है: "कह दीजिए कि मैं तो तुम्हारे जैसा एक इन्सान हूं, मेरे पास ये वही आती है कि तुम्हारा माबूद सिर्फ़ एक माबूद है।" (कहफ़ः 110)

सूरह हामीम सजदा में यही अल्फ़ाज़ हैं: "कह दीजिए यक़ीनन मैं तो तुम्हारे जैसा एक इन्सान हूं, मेरे पास ये वही आती है कि तुम्हारा माबूद सिर्फ़ एक माबूद है।"

आप स0अ0 के बारे में मक्का के मुश्रिकीन को एतराज़ हुआ कि ये कैसे रसूल हैं? उनके अन्दर तो वही सिफ़ात और वही तक़ाज़े हैं, जो एक इन्सान में होते हैं। क़ुरआन मजीद ने उनका एतराज़ नक़ल किया है, इरशाद होता है: "और वो कहते हैं कि ये कैसे रसूल हैं?खाना खाते हैं और बाज़ारों में चलते फिरते हैं, कोई फ़रिश्ता उनके साथ क्यों नहीं उतार दिया गया कि वो उनके साथ डराने को रहता।" (अलफ़ुरक़ानः 08)

.....(शेष पेज 19 पर)

ऐसे थे हमारे नबी स0अ0

अबरार हसन अय्यूबी नदवी

अल्लाह के रसूल स0अ0 लोगों में सबसे ज़्यादा इख़लाक़ वाले और किरदार वाले थे, सबसे ज़्यादा शरीफ़ और सबसे ज़्यादा अल्लाह का लिहाज़ रखने वाले थे। मामलों में बहुत साफ़ थे। यहां तक कि ख़ुद आप स0अ0 के परवरदिगार ने आप स0अ0 के इख़लाक़ करीमाना की तारीफ़ इन शब्दों में की हैः (आप बड़े अख़लाक़ वाले हैं) (नूनः 4)

आप स0अ0 के श्रेष्ठ गुणों व श्रेष्ठ व्यवहारों का अहाता तो नामुमकिन हैं फिर भी इस नबूवत के आफ़ताब की कुछ बातें मुलाहिज़ा होंः

❍ अपने सामने वाले ख़न्दा पेशानी से पेश आते। उसके हाथों को अपने हाथों में ले लेते और उस वक़्त तक न छोड़ते जब तक कि वो ख़ुद न छुड़ाए।

❍ आप स0अ0 ने कभी किसी खाने में ऐब नहीं निकाला। मरगूब हुआ तो खाया न मरगूब हुआ तो छोड़ दिया।

❍मिलने वालों से सलाम करने में पहल करते।

❍ अपने मुख़ातिब की ओर ध्यान देते, यहां तक कि वो समझता वही आपके नज़दीक ज़्यादा महबूब है।

❍ अगर कोई राज़दारी के साथ आपसे बात करना चाहता तो आप उसकी तरफ़ कान लगा देते।

❍ अगर कोई बात आपको नागवार होती तो चेहरे अनवर पर उसका असर आ जाता।

❍ फ़तेह व नुसरत के मौक़े पर गुरूर में नही आते थे।

❍ आपके नज़दीक वही काम ज़्यादा पसंदीदा होता जिसको निरन्तर किया जाये चाहे वो थोड़ा हो।

❍ इमामत की हालत में नमाज़ छोटी होती लेकिन अकेले की नमाज़ बहुत लम्बी होती।

❍ जब बिस्तर पर तशरीफ़ ले जाते तो दाहिना हाथ दाहिने रुख़सार के नीचे रखते।

❍ अगर हालते जनाबत में सोने का इरादा करते तो मक़ाम मख़ूसस को धो लेते और वज़ू फ़रमा कर सोते।

❍ ख़ुशी का मौक़ा आने पर अल्लाह के शुक्र के लिये सजदा करते।

❍ अगर किसी क़ौम से तकलीफ़ पहुंचने का अंदेशा होता तो यूं दुआ फ़रमातेः "ऐ अल्लाह! हम आपको उनके मुक़ाबले में करते हैं और उनके शर से आपकी पनाह मांगते हैं।"

❍ ख़ुशी और मसर्रत हासिल होने पर फ़रमातेः तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिये जिसके फ़ज़ल व करम से नेकियां अन्जाम पाती हैं और अगर कोई नापसंदीदा काम हो जाता तो फ़रमातेः हर हाल में अल्लाह का शुक्र व एहसान है।

❍ फ़ज्र की सुन्नत पढ़ने के बाद दाहिनी करवट लेट कर कुछ आराम फ़रमाते।

❍ जब किसी मय्यत को दफ़न करके फ़ारिग़ होते, खड़े होकर, ठहर कर फ़रमाते, अपने भाई की मग़फ़िरत और साबित क़दमी की दुआ करो क्योंकि इस वक़्त इसका हिसाब हो रहा है।

❍ सोते वक़्त सिरहाने मिस्वाक रखकर सोते और जब बेदार होते तो पहले मिस्वाक फ़रमाते।

❍ तीन उंगलियो से खाना खाते और खाने के बाद उसको चाट लेते और साफ़ कर देते।

❍ जहां तक हो सकता दाहिनी तरफ़ से काम को शुरू करना पसंद फ़रमाते थे। जैसे पाकी के पाने में, जूते पहनने और कंघी करने में, और अपने तमाम कामों में।

आप स0अ0 की दावत और आप स0अ0 का पैग़ाम पूरी मानव जाति के लिये है। आपने इन्सानियत का वक़ार बहाल किया। और अपनी हकीमाना तालीम व तरबियत से एक ऐसी मिसाली जमाअत तैयार कर दी जिसने पूरी दुनिया में अमन व अमान, मुहब्बत व भाईचारा, न्याय व इन्साफ़ और बराबरी के पैग़ाम को आम किया। मानवता की रक्षा की। इसीलिये कल तक जो रहज़न थे आज रहबर वही नहीं बल्कि बेहतरीन रहबर बन गये। कल तक जिनकी ज़िन्दगी झूठ में डूबी हुई थी वो आज इतने बुलन्द व मुक़द्दस मक़ाम व मरतबे तक पहुंच गये कि सदाक़त व पाकीज़गी को उनके इन्तिसाब से शर्फ़ हो जाये, कल तक जो मुर्दा थे आज वो ज़िन्दा ही नहीं बल्कि दूसरों को ज़िन्दा करने वाले बन गये। सच ही कहा था कहने वाले नेः

ख़ुद न थे जो राह पर वो दूसरों के हादी बन गये।
क्या नज़र थी जिसने मुर्दों को मसीहा कर दिया।।

सीरत-ए-पाक के कुछ नमूने

मुहम्मद अमीन हसनी नदवी

अल्लाह के रसूल स0अ0 लोगों में सबसे ज़्यादा इख़लाक़ वाले और किरदार वाले थे, सबसे ज़्यादा शरीफ़ और सबसे ज़्यादा अल्लाह का लिहाज़ रखने वाले थे। मामलों में बहुत साफ़ थे। यहां तक कि ख़ुद आप स0अ0 के परवरदिगार ने आप स0अ0 के इख़लाक़ करीमाना की तारीफ़ इन शब्दों में की हैः (आप बड़े अख़लाक़ वाले हैं) (नूनः 4)

आप स0अ0 के श्रेष्ठ गुणों व श्रेष्ठ व्यवहारों का अहाता तो नामुमकिन हैं फिर भी इस नबूवत के आफ़ताब की कुछ बातें मुलाहिज़ा होंः

❍ आप स0अ0 ने कभी किसी खाने में ऐब नहीं निकाला। मरगूब हुआ तो खाया न मरगूब हुआ तो छोड़ दिया।

❍ मिलने वालों से सलाम करने में पहल करते।

❍ जहां मजलिस ख़त्म होती फरोकश हो जाते। (सहाबा की मजलिस लगी होती और अगर आप बाद में आते तो जहां आख़िरी आदमी बैठा होता वहीं बैठ जाते ताकि लोगों को तकलीफ़ न हो और फिर सहाबा उसी एतबार से अपनी नशिश्त सही कर लेते)

❍ लोगों में सबसे ज़्यादा सख़ी और हिम्मत वाले थे।

❍ किसी कुंवारी दुल्हन से भी ज़्यादा हयादार थे।

❍ किसी सवाल के जवाब में "न" नहीं फ़रमाया।

❍ तकलीफ़ों और जाहिलों की बातों पर सब्र करते।

❍ अपने सामने वाले ख़न्दा पेशानी से पेश आते। उसके हाथों को अपने हाथों में ले लेते और उस वक़्त तक न छोड़ते जब तक कि वो ख़ुद न छुड़ाए।

❍ अपने मुख़ातिब की ओर ध्यान देते, यहां तक कि वो समझता वही आपके नज़दीक ज़्यादा महबूब है।

❍ अगर कोई राज़दारी के साथ आपसे बात करना चाहता तो आप उसकी तरफ़ कान लगा देते।

❍ अपने लिये किसी के खड़ा होने को पसंद नहीं फ़रमाते थे और इसी तरह बहुत ज़्यादा तारीफ़ से रोकते थे।

❍ अगर कोई बात आपको नागवार होती तो चेहरे अनवर पर उसका असर आ जाता।

❍ फ़तेह व नुसरत के मौक़े पर गुरूर में नही आते थे।

❍ आपके नज़दीक वही काम ज़्यादा पसंदीदा होता जिसको निरन्तर किया जाये चाहे वो थोड़ा हो।

❍ इमामत की हालत में नमाज़ छोटी होती लेकिन अकेले की नमाज़ बहुत लम्बी होती।

❍ जब बिस्तर पर तश्रीफ़ ले जाते तो दाहिना हाथ दाहिने रुख़सार के नीचे रखते।

❍ अगर हालते जनाबत में सोने का इरादा करते तो मक़ाम मख़ूसस को धो लेते और वज़ू फ़रमा कर सोते।

❍ ख़ुशी का मौक़ा आने पर अल्लाह के शुक्र के लिये सजदा करते।

❍ अगर किसी क़ौम से तकलीफ़ पहुंचने का अंदेशा होता तो यूं दुआ फ़रमातेः "ऐ अल्लाह! हम आपको उनके मुक़ाबले में करते हैं और उनके शर से आपकी पनाह मांगते हैं।"

❍ ख़ुशी और मसर्रत हासिल होने पर फ़रमातेः तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिये जिसके फ़ज़ल व करम से नेकियां अन्जाम पाती हैं और अगर कोई नापसंदीदा काम हो जाता तो फ़रमातेः हर हाल में अल्लाह का शुक्र व एहसान है।

❍ फ़ज्र की सुन्नत पढ़ने के बाद दाहिनी करवट लेट कर कुछ आराम फ़रमाते।

❍ जब किसी मय्यत को दफ़न करके फ़ारिग़ होते, खड़े होकर, ठहर कर फ़रमाते, अपने भाई की मग़फ़िरत और साबित क़दमी की दुआ करो क्योंकि इस वक़्त इसका हिसाब हो रहा है।

❍ सोते वक़्त सिरहाने मिस्वाक रखकर सोते और जब बेदार होते तो पहले मिस्वाक फ़रमाते।

❍ तीन उंगलियो से खाना खाते और खाने के बाद उसको चाट लेते और साफ़ कर देते।

❍ जहां तक हो सकता दाहिनी तरफ़ से काम को शुरू करना पसंद फ़रमाते थे। जैसे पाकी के पाने में, जूते पहनने और कंघी करने में, और अपने तमाम कामों में।

❍ दोशम्बा और जुमेरात के रोज़े रखते।

❍ व्यवहारिकता का श्रेष्ठ नमूना होने के बावजूद अपने अख़लाक़ की दुरुस्तगी अपने मौला से मांगते रहते थे और बुरे अख़लाक़ से अल्लाह की पनाह मांगते थे। हज़रत आयशा रज़ि0 फ़रमाती हैंः आप दुआ फ़रमाते थेः

"ऐ अल्लाह जिस तरह आपने मुझे हुस्ने सूरत से नवाज़ा है, मेरे अख़लाक़ भी संवार दे।" हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 फ़रमाते हैंः आप स0अ0 दुआ फ़रमाते थेः "ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह मांगता हूं निफ़ाक़ से, लड़ाई झगड़े से और बुरे अख़लाक़ से।"

❍ (और जो अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा तो उसे हम नशीनी का शर्फ़ हासिल होगा उनका जिन पर अल्लाह ने ईनाम फ़रमाया यानि अम्बिया, सिद्दीकीन, शुहदा, सालिहीन और ये रफ़ाक़त क्या ख़ूब होगी) (अन्निसाः 69)

❍ (हक़ीक़ी मोमिन तो वो है जो रसूलुल्लाह स0अ0 के अख़लाक़ का परतो हुआ और अब उनकी मुबारक सुन्नत व सीरत का नमूना हो) (एहज़ाबः 21)

❍ आक़ा स0अ0 ने ख़ुद फ़रमायाः "तुममें क़यामत के दिन मुझसे सबसे ज़्यादा क़रीब और मुहब्बत का सबसे ज़्यादा हक़दार वो होगा जो सबसे बेहतर अख़लाक़ वाला हो।"

❍ आप स0अ0 ने और फ़रमायाः क़यामत के दिन मोमिन बन्दे के मीज़ान में सबसे ज़्यादा भारी चीज़ उसका अच्छा अख़लाक़ होगा। और अल्लाह तआला बदज़ुबान और गन्दी बात को पसंद नहीं फ़रमाते।

❍ आप स0अ0 ने फ़रमायाः ईमान वालों में मुकम्मल ईमान वाला वो है जिसके अख़लाक़ सबसे अच्छे हों, और तुममे सबसे बेहतर वो हैं जो अपने घर वालों के साथ अच्छा सुलूक करने वाले हों।

आप स0अ0 की दावत और आप स0अ0 का पैग़ाम पूरी मानव जाति के लिये है। आपने इन्सानियत का वक़ार बहाल किया। और अपनी हकीमाना तालीम व तरबियत से एक ऐसी मिसाली जमाअत तैयार कर दी जिसने पूरी दुनिया में अमन व अमान, मुहब्बत व भाईचारा, न्याय व इन्साफ़ और बराबरी के पैग़ाम को आम किया। मानवता की रक्षा की। इसीलिये कल तक जो रहज़न थे आज रहबर वही नहीं बल्कि बेहतरीन रहबर बन गये। कल तक जिनकी ज़िन्दगी झूठ में डूबी हुई थी वो आज इतने बुलन्द व मुक़द्दस मक़ाम व मरतबे तक पहुंच गये कि सदाक़त व पाकीज़गी को उनके इन्तिसाब से शर्फ़ हो जाये, कल तक जो मुर्दा थे आज वो ज़िन्दा ही नहीं बल्कि दूसरों को ज़िन्दा करने वाले बन गये। सच ही कहा था कहने वाले नेः

ख़ुद न थे जो राह पर वो दूसरों के हादी बन गये।
क्या नज़र थी जिसने मुर्दों को मसीहा कर दिया।।

शेष : मीलाद–इस्लामी शरीअत की नज़र में

जैसे कुछ लोग इत्तिफ़ाक़ से जमा हो गये किसी ने उनको इहतिमाम करके नहीं बुलाया या किसी और ज़रूरत से बुलाये गये थे उसके चाहे किताब से या ज़बानी हुज़ूर पुर नूर सरवरे आलम फ़ख़्र बनी आदम के हालाते विलादत शरीफ़ा व दीगर अख़लाक़ व शुमाएल व मोजज़ात व फ़ज़ाएल मुबारका का सही–सही रिवायता से बयान कर दिया गया और बयान के बीच में अगर अम्र बिल मारूफ़ और बयान एहकाम की देखी जाये तो उसमें भी दरीग़ नहीं किया गया या अस्ल में इज्तिमा बयान व हुक्म सुनने के लिये हो, और उसके ज़िमन में उन वाक़्यों व फ़ज़ाएल का भी ज़िक्र आ गया ये वो सूरत है कि बिला नकीर जायज़ बल्कि मुस्तहब व सुन्नत है। रसूलुल्लाह स0अ0 ने अपने हालात व कमालात इसी तरीक़ से बयान फ़रमाये हैं और आगे सहाबा किराम ने उनको रिवायत किया जिसका सिलसिला अल्लाह के फ़ज़ल से आज तक जारी है और ताबक़ाए दीन रहेगा। (इस्लाहुर्रसूमः 108)

क़याम के बारे में फ़रमाते हैंः कभी बयान के बीच में बयान के फ़ज़ाएल नबविया स0अ0 में अगर शौक़ व वज्द ग़ालिब हो जाये, खड़े हो जायें, फिर उसमें किसी ख़ास मौंके के तय होने की कोई वजह नहीं जब कैफ़ियत ग़ालिब हो चाहे शुरू में चाहे बीच में या आख़िर में चाहे पूरे बयान में एक बार या दो–तीन बार जब ये ग़लबा न हो तो बैठे रहा करें। कभी ग़ल्बे के बावजूद इसी तरह ज़ब्त करके बैठे रहें। और न महफ़िले मौलूद को ख़ास करें अगर और मौक़े पर भी आप स0अ0 के ज़िक्र से ग़ल्बा व शौक़ हो तो कभी–कभी खड़े हो जाया करें। (इस्लाहुर्रसूमः 118–119)

यहां इस बात का ज़िक्र बहुत ज़रूरी समझता हूं कि मीलाद की महफ़िलें करने वाले चाहे आप स0अ0 की मन्शा सही मानों में न समझ पाने की वजह से ज़ाहिरी एतबार से ग़लती पर हों और इसी तरह मीलाद का विरोध करने वालों या मीलाद में सुधार चाहने वालों के विरोध में ग़लती पर हों, मगर वो नेक नियत हों, और उनके दिल में आप स0अ0 की मुहब्बत हो और उनकी इस मुहब्बत से काम लेकर उनको आप स0अ0 की सुन्नतों पर उभारा जा सकता है और उनको सुन्नत के रास्ते पर लाया जा सकता है। लेकिन अगर दीन का काम करने वालों ने ग़फ़लत की तो शैतान तो ग़फ़लत नहीं करेगा। वो हमारे भाइयों को उचक लेने की कोशिश करता ही रहेगा। ये कुछ लाइने मैंने मीलाद के बारे में पेश की जो हज़रात सहमत न हों उनसे माफ़ी चाहता हूं और उनके मुफ़ीद मश्वरे और हिदायत सुनने के लिये तैयार हूं।

पैग़म्बर-ए-इन्क़िलाब

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

मानव इतिहास में विभिन्न प्रकार की क्रान्तियाँ हुईं। राजनीतिक क्रान्ति, जन क्रान्ति, सामाजिक क्रान्ति, विज्ञान और कारोबार की क्रान्ति इत्यादि के नारे तो आज के दौर का फ़ैशन बन चुके हैं। लेकिन ये भी वास्तविकता है कि इन सारी क्रान्तियों में कोई भी क्रान्ति स्थिर व स्थायी नहीं साबित हुई। क्षणिक लाभ के साथ ही सब अपनी हक़ीक़त खो बैठे और इतिहास के सीने में दफ़न होकर रह गये। बल्कि कभी–कभी ये भी हुआ कि उन क्रान्तियों के विरुद्ध दूसरी क्रान्तियों की आवश्यकता पड़ी, और एक क्रान्ति की जगह दूसरी क्रान्ति पूरी शिद्दत के साथ लागू हुई।

क्रान्ति अस्ल में नाम है एक ऐसे बदलाव का जो कार्यरत व्यवस्था के विरुद्ध हो और उसकी जगह पर एक ऐसी व्यवस्था को चलन में लाया जाये जो ज़्यादा नेक, स्थिर व स्थायी हो। इस लिहाज़ से मानव इतिहास में आख़िरी पैग़म्बर मुहम्मद मुस्तफ़ा स0अ0 के द्वारा लायी गयी क्रान्ति ही वास्तविक अर्थों में सबसे सफल और स्थायी क्रान्ति साबित हुई।

आख़िरी नबी मुहम्मद स0अ0 के द्वारा जो क्रान्ति हुई उसके गहरे प्रभाव पूरी दुनिया पर प्रकट हुए और अल्लाह की सारी मख़लूक़ समान रूप से उससे लाभान्वित हुई। आज पूरी दुनिया के सामने एक सफ़ल क्रान्ति की कोई मिसाल पेश की जा सकती है तो वो केवल यही मुहम्मद स0अ0 द्वारा लायी गयी क्रान्ति है।

मुहम्मद स0अ0 द्वारा बरपा की गयी क्रान्ति की सफलता और उसके स्थायित्व के कुछ आधार भूत कारण हैं। जिसे हम चार भागों में विभाजित कर सकते हैं।

1– श्रेष्ठ नेतृत्व 2– अडिग आस्था व दृष्टिकोण 3– धर्म का हकीमाना प्रचार 4– धैर्यता व दृढ़ता

1– श्रेष्ठ नेतृत्वः किसी भी क्रान्ति की सफलता का दारोमदार उसके नेतृत्वकर्ता की योग्यताओं और उसके श्रेष्ठ आचरण पर होता है। इस लिहाज से मुहम्मद स0अ0 सबसे सफल व्यक्ति थे। आपके अद्वितीय आचरण की गवाही तो स्वयं आपके दुश्मनों ने दी। उन्होनें ही आपको सादिक़ और अमीन जैसे नामों से पुकारा। आपकी ज़ात हर एतबार से ग़ैरमुत्नाज़अ बल्कि सबके लिये समान रूप से विश्वस्नीय थी। यही कारण है कि आप स0अ0 के दुश्मनों को नफ़रत आपके नाम से नहीं बल्कि आपके संदेश से थी।

2– अडिग आस्था व दृष्टिकोणः किसी भी क्रान्ति को परवान चढ़ाने और उसके हामियों में कार्यक्षमता पैदा करने वाला वो बुनियादी अक़ीदा और नज़रिया होता है जिस पर क्रान्ति के भवन का निर्माण होता है। ये आस्था और दृष्टिकोण जितना खरा सच्चाई पर आधारित होगा क्रान्ति भी उतनी ही तेज़ होगी। हालात चाहे जैसे भी हों, विरोध कितना ही ज़्यादा हो, मुसीबतों व मुश्किलों के कैसे पहाड़ सामने हों, लेकिन अक़ीदे और नज़रिये पर कोई समझौता न करना ही क्रान्ति की सफलता की दलील है।

नबी करीम स0अ0 का अपने अक़ीदे और नज़रिये पर न डिगने वाला ईमान व यक़ीन था। यही कारण है कि जब मक्का के मुश्रिको ने आप स0अ0 की शिकायत अबूतालिब से की तो पूरी दृढ़ता से फ़रमायाः "चचा जान! ख़ुदा की क़सम! अगर ये लोग मेरे एक हाथ में सूरज और दूसरे हाथ में चाँद लाकर रख दें, तब भी मैं ये काम नहीं छोड़ूंगा, अल्लाह तआला या तो उस काम को पूरा करेगा या मैं ख़ुद इस पर निसार हो जाऊंगा।"

हुज़ूर स0अ0 का ये ऐतिहासिक जुम्ला एक सफल क्रान्ति का आधार और इस्लामी क्रान्ति के आन्दोलन के कार्यकर्ताओं के लिये प्रकाश का स्तम्भ है।

3– धर्म का बुद्धिमतापूर्ण प्रचारः क्रान्ति का आधार जिन नियमों व दृष्टिकोणों पर स्थापित होता है उसके प्रचार व प्रसार के लिये निरन्तर संघर्ष व बुद्धिमता पूर्ण तरीक़े की आवश्यकता होती है। आप स0अ0 का पूरा जीवन सई पैहम, अनथक परिश्रम और निरन्तर संघर्ष से परिपूर्ण है। आप स0अ0 ने पूरी बुद्धिमता के साथ प्रचार का काम आरम्भ किया। किसी भी प्रकार की जल्दबाज़ी नहीं की। पहले गुप्त रूप से फिर खुले तौर पर और आवश्यकता पड़ने पर जंग के रूप में और कभी सुलह के द्वारा मोर्चा संभाला। आरम्भ अपने परिवार वालों से किया, फिर अपने ख़ानदान के लोगों को समझाया। उसके बाद मक्का वालों को आवाज़ लगायी। और फिर पूरे अरब और

उसके बाद ग़ैर अरब के देशों को सम्बोधित किया। इस पूरे दौर में आप पूरी दृढ़ता के साथ अपने मिशन में लगे रहे और इन्क़िलाब की बुनियादों को मज़बूत करते रहे। धर्म के प्रचार–प्रसार में आप स0अ0 के बुद्धिमता पूर्ण तरीक़े का परिणाम ये हुआ कि छोटे से समय में पूरा अरब और ग़ैर अरब एक नयी क्रान्ति से परिचित हुआ।

धैर्यता व दृढ़ताः हर क्रान्तिकारी आन्दोलन विरोध और निंदा से बच नहीं सकता है। ये संभव नहीं कि प्रचलित व्यवस्था से जुड़े लोगों के लाभ पर चोट पड़े और वो इसे ख़ामोशी से स्वीकार कर लें, बल्कि क्रान्तिकारी आन्दोलन और उसका संघर्ष का स्तर व पैमाना उसका विरोध और निन्दा ही है। विरोध जितना तीव्र होगा, आन्दोलन की सच्चाई और हक़्क़ानितय उतनी ही विश्वस्नीय होगी।

मानव इतिहास और मानव सभ्यता के सबसे बड़े मार्गदर्शक व नेतृत्वकर्ता मुस्तफ़ा स0अ0 का पवित्र जीवन महानता व दृढ़ता, सब्र व धैर्यता और त्याग व क़ुर्बानी से परिपूर्ण हैं। ज़हनी तकलीफ़ों से लेकर जिस्मानी हिंसा तक कौन सा ऐसा हरबा है जो आप स0अ0 के विरोधियों ने न अपनाया हो लेकिन हर मोर्चे पर आप स0अ0 डटे रहे।

आप स0अ0 की बेटियों को अबूलहब का अपने बेटों से तलाक़ दिलवाना। आप स0अ0 के बेटे हज़रत क़ासिम रज़ि0 और हज़र अब्दुल्लाह रज़ि0 की वफ़ात पर ताज़ियत के बजाए अबू लहब का ख़ुशी का इज़हार करना। शोएब अबी तालिब की महसूरी। तायफ़ के सफ़र में हिंसा। चलते फिरते ताना दिया जाना। महबूब असहाब पर ज़ुल्म व सितम, इबादत व तिलावत पर पाबन्दी, क़त्ल की साज़िश, घर बार छोड़कर मदीना को हिजरत, जंगे उहद में ज़ख़्मियों पर ज़ख़्म, ख़ानदान वालों और अज़ीज़ों की शहादत। अपमान व हिंसा की ये ऐसी घटनाएं हैं जिनकी ताब लाये बग़ैर कोई क्रान्ति अपनी मंज़िल तक नहीं पहुंच सकती है।

पैग़म्बर–ए–इन्क़िलाब स0अ0 की पवित्र जीवनी रहती दुनिया तक की सारी क्रान्तियों के लिये एक नमूना है। किसी भी दीनी या राजनीतिक क्रान्ति की सफलता का उसूल उन्हीं उसूलों पर है जिन्हें अमली तौर पर आप स0अ0 ने अपनाया। उन नियमों के अलावा सारे नियम केवल समय की बर्बादी हैं।

शेष : इस्लामी अक़ीदा

फिर आगे उसका जवाब भी दिया गया है, अल्लाह तआला का इरशाद हैः "और आपसे पहले हमने जो रसूल भेजे वो सब खाना खाते और बाज़ारों में चलते फिरते ही थे।" (अलफ़ुरक़ानः 20)

सूरह बनी इस्राईल में और साफ़ तौर से यही बात कही गयी है, पहले मक्का के मुश्रिकों की मागों का बयान किया गया है, क़ुरआन मजीद उनको नक़ल कर रहा हैः "और वो बोले कि हम तो उस वक़्त तक आपको मानने वाले नहीं जब तक कि हमारे लिये ज़मीन से कोई चश्मा न जारी कर दें। या आपके लिये खजूद व अंगूर का बाग़ हो फिर आप उसके बीच से नहरें निकाल दें। या जैसा कि आपका ख़्याल है हम पर आसमान के टुकड़े गिरा दें या अल्लाह को और फ़रिश्तों को निगाहों के सामने ले आयें। या सोने का आपका कोई घर हो या आप आसमान पर चढ़ जायें और हम तो आपके चढ़ जाने को भी उस वक़्त तक नहीं मानेंगे जब तक आप कोई ऐसी किताब लेकर न उतरें जिसको हम पढ़ सकें।" (बनी इस्राईलः 90–93) फिर इसी आयत के आख़िर में आप स0अ0 से कहलवाया जा रहा हैः "फ़रमा दीजिए! मेरे रब की ज़ात पाक है, मैं क्या हूं, एक इन्सान हूं जिसे रसूल बनाया गया।"

फिर अल्लाह तआला ख़ुद फ़रमाते हैं किः "और लोगों के पास हिदायत आ जाने के बाद मान लेने में सिर्फ़ यही चीज़ रूकावट बनती है कि वो कहते हैं कि क्या अल्लाह ने इन्सान को रसूल बना दिया?" (बनीइस्राईलः 94)

फिर अल्लाह तआला ने ख़ुद ही इस बात को साफ़ कर दिया कि रसूल अगर फ़रिश्तों की हिदायत के लिये आता तो यक़ीनन फ़रिश्ता होता लेकिन ये रसूल तो इन्सानों की हिदायत के लिये आता है, तो इसको फ़रिश्ता कैसे बनाया जाता, इरशाद होता हैः "आप कह दीजिए कि अगर ज़मीन में फ़रिश्ते होते जो आराम से चल फिर रहे होते तो ज़रूर हम उन पर आसमान से फ़रिश्ते को रसूल बनाकर उतार देते।" (बनी इस्राईलः 95)

ये बात इन्सान की मानसिकता में अल्लाह तआला ने रखी है कि वो अपने ज़िन्स की ही पैरवी कर सकता है और चूंकि आप स0अ0 को तमाम इन्सानों के लिये नमूना बनाया गया है, जैसा कि अल्लाह का ऐलान हैः "यक़ीनन तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल स0अ0 में बेहतरीन नमूना मौजूद है।" (एहज़ाबः 21)

इसलिये अल्लाह तआला ने आप स0अ0 को बशर बनाया ताकि आप स0अ की ज़ात सभी इन्सानों के लिये नमूना हो, ये कामिल बेहतरीन नमूना है जो अकेला नजात का रास्ता है।

आख़िरी सहारा

अबुल अब्बास ख़ाँ

लाहौर के एक होटल में कुछ नौजवानों की महफ़िल सजी हुई थी। सभी कम्यूनिस्ट थे। बहुत ज़्यादा ज़हीन और अपने फ़न में माहिर। शराब का दौर चल रहा था। कई बोतलें हलक़ से उतर चुकी थी। जाम पर जाम लुढ़क रहे थे। जिस्मों पर सुरूर चढ़ा हुआ था। पूरा माहौल मस्ती में डूबा हुआ था। नशा सर चढ़ चुका था। कभी क़दम लड़खड़ाते तो कभी ज़बान फिसल जाती। मदहोशी के इस माहौल में तवज्जो का मरकज़ एक अकेली ज़ात थी जिसे शेर व अदब की दुनिया में अख़्तर शीरानी के नाम से जाना जाता है।

अख़्तर शीरानी एक ख़ुद पसंद शायर थे। किसी को भी शुमार में न लाते। तरक़्क़ी पसंद शायर तो उन्हें एक आंख न भाते। महफ़िल में इधर–उधर की बातें चलती रहीं। लोग सवाल करते रहे और वो जवाब देते रहे। किसी के जवाब में कहा कि मुसलमानों में अब तक तीन शख़्स बहुत ज़हीन पैदा हुए हैं। पहले अबुल फ़ज़ल, दूसरे असदुल्लाह ख़ाँ ग़ालिब और तीसरे अबुल कलाम आज़ाद।

किसी को शायर मानना उनकी शान के ख़िलाफ़ था। ख़ास कर अपने बराबर वाले शायरों को वो कम ही ख़ातिर में लाते। किसी ने जोश के बारे में पूछा तो कहा कि वो तो नाज़िम हैं। सरदार जाफ़री का नाम आया तो बस मुस्करा दिये। फ़िराक़ का ज़िक्र छिड़ा तो हूं हाँ कह कर टाल दिया। साहिर लुधयानवी की बात हुई तो कहा कि उसे अभी मश्क़ करने दो। ज़हीर कशमीरी के बारे में कहा कि हाँ बस नाम सुना है। अहमद नदीम क़ासमी के बारे में कहा कि वो तो मेरा शार्गिद है।

बेलगाम तब्सरों और क़हक़हों से सारी फ़िज़ा रंगीन थी। कभी ये बात छिड़ती तो कभी वो बात। अख़्तर शीरानी माहौल को ख़ुशनुमा बनाते रहे। इतने में किसी दहरिये ने बहस का रुख़ मोड़ दिया। सवाल किया कि फ़लाँ पैग़म्बर (अलै0) के बारे में क्या कहते हो?शीरानी नशे में चूर थे, आंखे लाल थीं, अल्फ़ाज़ टूट रहे थे, क़दम लड़खड़ा रहे थे, लेकिन ये सवाल सुनते ही चौंक उठे, कहाः क्या बकते हो?अदब व इन्शा की बात करो, शेर व शायरी की बात करो.....।

अख़्तर शीरानी की बदली हुई कैफ़ियत से पूरा माहौल सहम गया। कुछ लम्हों के लिये सबका नशा जाता रहा। अचानक एक नौजवान ने बात का रुख़ अफ़लातून की तरफ़ मोड़ दिया और कहा कि उसके मकालमात के बारे में क्या ख़्याल है? अरस्तू और सुक़रात के सिलसिले में क्या कहते हो?अख़्तर शीरानी अपनी पिछली हालत पर लौट चुके थे। कई प्याले उड़ेल कर अपने ख़ास अन्दाज़ में बोलेः अजी उनकी क्या बात करते हो?हमारी बात करो, ये पूछो कि हम कौन हैं? ये अफ़लातून, ये अरस्तू और सुक़रात अगर आज होते तो हमारे ही हल्क़े में बैठते, अब हमें उनसे क्या ग़रज़ कि अपनी राय फिरें।

अख़्तर शीरानी मदहोशी की दुनिया में जा चुके थे। जामे बिल्लोरीं ने अपना रंग जमा दिया। पूरा वजूद लड़खड़ा रहा था। उनका गिरता संभलता वजूद देखकर एक बदबख़्त कम्यूनिस्ट ने सवाल कर दिया कि मुहम्मद (स0अ0) के बारे में आपका क्या ख़्याल है?

सवाल सुनना ही था कि मानो एक बिजली सी कड़क उठी। एक भूचाल सा आ गया। शराब का गिलास उठाया और उसी कम्यूनिस्ट पर दे मारा। बदबख़्त एक गुनाहगार से ये सवाल करता है। एक रूहे स्याह से क्या पूछता है? एक फ़ासिक़ से क्या कहलवाना चाहता है। मैं तेरी कोर बातिनी से वाक़िफ़ हूं, मैं तेरी मंशा समझता हूँ।

अल्लाह, अल्लाह! नशे में धुत एक शराबी, जिसे आस–पास की ख़बर नहीं, वो ख़ुद सरापा कहर और ग़ज़ब बन गया। पूरा जिस्म कांपने लगा। आंखों से आसुओं की झड़ी लग गयी है। "ऐसी हालत में तूने ये पाक नाम क्यों लिया?तेरी जुर्रत कैसे हुई?"

महफ़िल का रुख़ पलट गया। क़हक़हों की ये मजलिस आंसुओं में डूब गयी। अख़्तर शीरानी पूरी रात रोते रहे। कहते थे, "ये लोग इतने बेबाक हो गये हैं कि मुझसे मेरा आख़िरी सहारा भी छीन लेना चाहते हैं, मैं गुनहगाह हूं लेकिन ये कम्बख़्त मुझे काफ़िर बना देना चाहते हैं।"

कुरआन शरीफ़ के आदाब

कुरआन शरीफ़ के कुछ बातिनी आदाब:

•कुरआन पाक की अज़मत दिल में हो।

•अल्लाह तआला की शान, रिफ़अत व बड़ाई को दिल में पैदा करे।

•दिल को वसवसों और बुरे ख़्यालों से पाक करे।

•ग़ौर व फ़िक्र से काम ले और लज़्ज़त के साथ पढ़े।

•रहमत की आयता पर दिल में ख़ुशी पैदा करे और अज़ाब की आयतों पर रंज व ग़म पैदा करे और दिल लरज़ उठे।

•कानों को इतने ध्यान में लगाये कि जैसे अल्लाह तआला कलाम फ़रमा रहा है।

लेकिन इनमें से सबसे पहले अदब और हक़ ये है कि कुरआन मजीद पढ़ने से पहले:

"अऊज़बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम – बिस्मिलल्लाहिर्रहमानिर्रहीम"

पढ़कर तिलावत करे। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"जब कुरआन मजीद पढ़ा जाये तो तुम लोग ग़ौर से सुनो और ख़ामोश रहो ताकि तुम पर रहम किया जाये।"

ख़ुशुलहानी या गाना:

हदीस शरीफ़ में कुरआन शरीफ़ को ख़ुशुलहानी से पढ़ना मुस्तहसन बताया गया है, एक जगह हुज़ूर स०अ० का इरशाद है:

"अच्छी आवाज़ से कुरआन शरीफ़ को मुज़य्यन करो।"

दूसरी जगह इरशाद है:

"अच्छी आवाज़ से कुरआन शरीफ़ का हुस्न दोगुना हो जाता है।"

लेकिन गाने की तर्ज़ पर कुरआन शरीफ़ का पढ़ना सही नही है और आप स०अ० ने इसको मना किया है। इरशाद है: "अनक़रीब एक जमाअत आने वाली है जो गाने और नौहा करने वालों की तरह कुरआन शरीफ़ को बना बना कर पढ़ेगी। वो तिलावत ज़रा भी उनके लिये फ़ायदेमन्द न होगी। ख़ुद वो लोग भी फ़ित्ने में पड़ेंगे और जिनको वो पढ़ना अच्छा मालूम होगा, उनको भी फ़ित्ने में डालेंगे।"

हज़रत ताउस रह० कहते हैं कि किसी ने आप स०अ० से पूछा कि अच्छी आवाज़ से पढ़ने वाला कौन शख़्स है, आप स०अ० ने फ़रमाया कि वो शख़्स कि जब तुम उसको तिलावत करते देखो तो महसूस करो कि उस पर अल्लाह का ख़ौफ़ तारी है।

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

VOLUME-06

DECEMBER 2014

ISSUE-12

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi

MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI

Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9792646858
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.